तापमान
अधिकतम 28 .2 डिग्री
न्यूनतम 7.0 डिग्री

हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार, 16 नवंबर 2025

11 वर्चुअल लैब्स प्रशिक्षण शिविर में 50 शिक्षकों ने सीखा ...

12 डीसी ने किया शहर का निरीक्षण, गंदगी ...

खबर संक्षेप

परिवेदना समिति की मासिक बैठक 18 को

रोहतक। उपायुक्त सचिन गुप्ता ने बताया कि 18 नवंबर को प्रदेश के विकास एवं पंचायत, खान एवं भूविज्ञान मंत्री कृष्ण लाल पंवार की अध्यक्षता में जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की मासिक बैठक का आयोजन किया जाएगा। इस बैठक का आयोजन स्थानीय जिला विकास भवन स्थित डीआरडीए सभागार में 18 नवंबर को दोपहर बाद 3 बजे होगा। विकास एवं पंचायत मंत्री मासिक बैठक के एजेंडे में शामिल 15 शिकायतों की सुनवाई करके मौके पर उपस्थित संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगे।

मेले में 70 बहुप्रतिष्ठित कंपनियां लेंगी भाग

रोहतक। हसनगढ़ आईटीआई के प्रधानाचार्य रविंद्र चहल ने बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय शिक्षुता मेले का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 17 नवंबर को राजकीय आईटीआई हसनगढ़ में लगभग 70 बहुप्रतिष्ठित कंपनियां भाग लेंगी। पांचवीं से बारहवीं कक्षा पास, कौशल प्रशिक्षण प्रमाण पत्र धारक व आईटीआई पास पात्र इच्छुक उम्मीदवार भाग ले सकते है। यह रोजगार पाने का एक सुनहरा अवसर है।

अग्रवाल वैश्य समाज का स्थापना दिवस 30 को

रोहतक। अग्रवाल वैश्य समाज हरियाणा अपने गौरवशाली इतिहास और सामाजिक एकता की पहचान को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष 17वां स्थापना दिवस समारोह भव्य रूप से मनाने जा रहा है।

सुभाष तायल

समारोह 30 नवम्बर को सुबह 10:30 बजे होटल ग्रेस, अम्बाला रोड, कैथल (नजदीक विश्वकर्मा चौक) पर आयोजित किया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला की अध्यक्षता एवं नेतृत्व में आयोजित होने वाले इस स्थापना दिवस समारोह में समाज के प्रदेशभर से पदाधिकारी, कार्यकर्ता और सम्मानित वैश्य बंधु बड़ी संख्या में भाग लेंगे। प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष सुभाष तायल ने बताया कि अग्रवाल वैश्य समाज का स्थापना दिवस केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि यह उस संघर्ष, समर्पण और सेवा यात्रा का प्रतीक है, जिसने समाज को आज प्रदेश में एक मजबूत संगठन के रूप में स्थापित किया है।

एमडीयू: बायोटेक्नोलॉजी में छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

रोहतक। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के सेंटर फॉर मेडिकल बायोटेक्नोलॉजी (सीएमबीटी) में इग्नाइट पब्लिक स्कूल, खेड़ी साध के कक्षा 9वीं व 10वीं के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक भ्रमण किया। यह भ्रमण विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जिज्ञासा बढ़ाने और उन्हें आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान से रूबरू कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। विद्यार्थियों का स्वागत सीएमबीटी के निदेशक डॉ. हरि मोहन ने किया।

लोग दफ्तरों का चक्कर काटने को मजबूर : नहीं बढ़ रही ऑनलाइन योजना की रफ्तार

सौ से अधिक लोगों ने रजिस्ट्री के लिए किए आवेदन

आफत बना पोर्टल, नवंबर माह में अब तक केवल 10 रजिस्ट्री

एक नवंबर से पेपरलेस रजिस्ट्री प्रणाली शुरू कर दी गई है लेकिन जानकारी के अभाव और पोर्टल प्रणाली में कुछ खामियों के चलते यह प्रक्रिया रफ्तार नहीं पकड़ पा रही है। वकील से लेकर कर्मचारी चक्कर काटने को मजबूर।

» ऑनलाइन प्रक्रिया को सही ढंग से चलाने में अभी लग सकता है काफी समय

विजय अहलावत ▶▶ रोहतक

हरियाणा सरकार द्वारा पूरे प्रदेश में एक नवंबर से पेपरलेस रजिस्ट्री प्रणाली शुरू कर दी गई है लेकिन जानकारी के अभाव और प्रणाली में कुछ खामियों के चलते यह प्रक्रिया रफ्तार नहीं पकड़ पा रही है। इसके साथ ही वकील से लेकर कर्मचारी भी नई प्रणाली के तहत रजिस्ट्री कराने को लेकर परेशानी का सामना कर रहे हैं। तहसील कार्यालय में अभी तक केवल दस रजिस्ट्री ही नई प्रक्रिया के तहत हो पाई हैं। इसके अलावा सौ से अधिक लोगों ने रजिस्ट्री के लिए आवेदन भी किया हुआ है। ऑनलाइन प्रक्रिया को सही ढंग से चलाने में अभी काफी समय लग सकता है।

रोहतक। तहसील कार्यालय में कार्य करते हुए कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

सौ से अधिक आए आवेदन

जब भी कोई नई व्यवस्था शुरू होता है तो उसे शुरूआत में समय लगता है। अभी लोगों को ऑनलाइन रजिस्ट्री प्रक्रिया को लेकर पूरी जानकारी नहीं है। उनके कागजात भी पूरे नहीं होते, जिसकी वजह से अप्लाई करने में उन्हें दिक्कतें आती हैं। सौ से अधिक आवेदन आ चके हैं और अभी तक दस रजिस्ट्री भी हो गई हैं। ऑनलाइन सिस्टम सही चल रहा है। भविष्य में तेजी से काम होगा।
-यशपाल शर्मा, तहसीलदार रोहतक

यू चलेगी प्रक्रिया: नए नियमों के तहत पंजीकरण करवाने वाले व्यक्ति को केवल एक बार ही तहसील कार्यालय में आना होगा। इसके अलावा इस नई व्यवस्था के तहत घर बैठे ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी की जा सकती है। जिसमें आधार व ओटीपी से सत्यापन, ऑनलाइन स्टाम्प ड्यूटी व रजिस्ट्रेशन फीस का भुगतान व सब-रजिस्ट्रार के साथ अप्वॉइंटमेंट बुक करना शामिल है।

रजिस्ट्री कराने वाले वकीलों को ही नियमों की जानकारी नहीं

दरअसल, रजिस्ट्री को कराने वाले वकीलों के पास ही अभी नई प्रणाली के नियमों की पूरी जानकारी नहीं है। वह इसको लेकर पूरी जानकारी लेने में जुटे हुए हैं। वहीं दूसरी ओर जमीन के खरीदार व बेचने वाले लोग भी असमंजस में फंसे हुए हैं। पुरानी प्रणाली के तहत जहां रोहतक तहसील में रोजाना दर्जनों रजिस्ट्री होती थी, वहीं अब नई प्रणाली के बाद यह संख्या एक या दो तक सिमिट गई है। लोगों में जागरूकता व जानकारी का काफी अभाव है ऐसे में लोग स्वंय ऑनलाइन आवेदन नहीं कर पाते हैं। ऐसे समय में रजिस्ट्री कराने वाले वकीलों को भी इसका कोई प्रशिक्षण देने की जरूरत है। ताकि वो भी आवेदन प्रक्रिया को पूरी तरह से समझ सकें। तहसील कार्यालय के सूत्रों का तो यहां तक कहना है कि ऑनलाइन प्रक्रिया में ही खामिया हैं। कई बार कई घंटों तक सर्वर डाउन रहता है और लोग इंतजार करते रहते हैं।

एक नवम्बर से शुरू हुई पेपर लेस रजिस्ट्री प्रणाली

हरियाणा सरकार ने पूरे प्रदेश में एक नवंबर से कागज रहित पंजीकरण प्रणाली लागू की है। इसके साथ ही पुरानी पंजीकरण प्रणाली बंद कर दी गई है। योजना शुरू होने के कुछ दिनों तक पेपरलेस रजिस्ट्री हुई। लेकिन फिर इसमें दिक्कत आने लगी। कुछ लोग आवेदन में पूरी स्पष्ट जानकारी नहीं दे पा रहे हैं जिसकी वजह से उनका आवेदन अटका हुआ है। इसके अलावा उनका यह भी कहना है कि ऑनलाइन सिस्टम में ही कमी है जिसकी वजह से वह आए दिन तहसील के चक्कर पर चक्कर लगाने को मजबूर हैं।

डीसी ने किया था तहसील का निरीक्षण, दिए दिशा निर्देश

बृहस्पतिवार को जिला उपायुक्त सचिन गुप्ता ने तहसील कार्यालय का निरीक्षण किया था। यहां उन्होंने तहसीलदार सहित अन्य कर्मचारियों से सामने आ रही समस्याओं को लेकर बातचीत की थी। इसमें पता चला कि लोगों को ऑनलाइन आवेदन करने में दिक्कतें आ रही हैं। इसके बाद तहसील में हेल्प डेस्क की शुरूआत की गई, जहां लोग आवेदन करने से पहले पूरी जानकारी ले सकते हैं।

यूथ फेस्टिवल में 14 पुरस्कार जीते

रोहतक। राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक की छात्राओं ने एमडीयू में आयोजित अंतर-क्षेत्रीय युवा उत्सव 'यूनिफेस्ट 25 में विभिन प्रतियोगिताओ में 14 पुरस्कार जीते । इससे पहले ज़ोनल यूथ फेस्टिवल में भी 24 पुरस्कार जीते थे। प्राचार्य डॉ शमशेर सिंह ने सभी छात्राओं को बधाई दी।

गांव फरमाना खास में शराब ठेके पर फायरिंग का मामला सुलझा

वारदात में शामिल आरोपी गिरफ्तार, होगी पूछताछ

हरिभूमि न्यूज. रोहतक

पुलिस ने ऑपरेशन ट्रैक डाउन अभियान के तहत गांव फरमाना खास स्थित शराब के ठेके पर हुई फायरिंग की वारदात में शामिल एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे एक दिन के पुलिस रिमांड पर भेजा गया है। पुलिस अब मामले की गहनता से जांच कर रही है। प्रभारी सीआईए-1 निरीक्षक कुलदीप सिंह ने जानकारी दी कि शिकायतकर्ता मनीष, जो गंगानगर का रहने वाला है और शराब ठेकेदार का कार्य करता है, ने थाना महम में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत में मनीष ने बताया कि उसे कई दिनों से अलग-अलग नंबरों से रंगदारी मांगने की कॉल आ रही थीं। 24 अक्टूबर 2025 को उसे सूचना मिली कि फरमाना गांव स्थित उसके शराब ठेके पर अज्ञात युवकों ने फायरिंग कर दी है। मामले की जांच सहायक उपनिरीक्षक विनोद दलाल को सौंपी गई।

अब डीजल ऑटो सीएनजी इलेक्ट्रिक में तब्दील होंगे

31 दिसंबर 2025 तक सभी डीजल ऑटो को स्वच्छ ईंधन में बदलने का लक्ष्य निर्धारित

रोहतक। शहर की वायु गुणवत्ता में सुधार और प्रदूषण पर नियंत्रण के उद्देश्य से आरटीए विभाग ने डीजल ऑटो को चरणबद्ध तरीके से सीएनजी और इलेक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तित करने की दिशा में अभियान तेज कर दिया है। इसी क्रम में शनिवार को आरटीए सचिव वीरेंद्र सिंह ढुल के तत्वावधान में ऑटो चालकों के प्रधानों ने विभिन्न ऑटो स्टैंडों पर पहुंचकर चालकों को जागरूक किया। यह अभियान पिछले दिनों आरटीए कार्यालय में हुई विशेष बैठक में लिए गए निर्णय के बाद आगे बढ़ाया गया है, जिसमें 31 दिसंबर 2025 तक सभी डीजल ऑटो को स्वच्छ ईंधन पर आधारित वाहनों में बदलने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। शनिवार को जागरूकता अभियान चलाया गया।

मार्केट कमेटी चेयरमैन व वाइस चेयरमैन कल संभालेंगे पदभार

सांपला। मार्केट कमेटी के नवनियुक्त चेयरमैन उदयभान मलिक व वाइस चेयरमैन हरबंसलाल मक्कड़ 17 नवंबर सोमवार को अपनी पदभार ग्रहण करेंगे। इससे पहले शपथ ग्रहण समारोह होगा, जिसमें मुख्यातिथि के रूप में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी शिरकत करेंगे। भाजपा के सांपला मंडल अध्यक्ष कपिल खत्री ने बताया कि सोमवार को नई अनाज मंडी में होने होने वाले शपथ ग्रहण समारोह में मार्केट कमेटी के चेयरमैन उदयभान व वाइस चेयरमैन हरबंस को हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी शपथ दियाएंगे।

यूपीएससी कोचिंग रजिस्ट्रेशन के लिए आज अंतिम दिन

रोहतक। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय (एमडीयू) के यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर कॉम्पिटिटिव एग्जामिनेशंस द्वारा सिविल सेवा परीक्षा (सीएसई) 2026 के अभ्यर्थियों के लिए व्यापक मार्गदर्शन, काउंसलिंग और कोचिंग कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है, जिसमें रजिस्ट्रेशन 16 नवंबर तक होंगे। यूसीसीई निदेशक प्रो. जे.एस. हुड्डा ने बताया कि हरियाणा सहित क्षेत्र में बढ़ती सिविल सेवा अभ्यर्थियों की संख्या को देखते हुए इस कार्यक्रम को बहु-स्तरीय और विस्तृत स्वरूप में पुनः प्रारंभ किया गया है।

छात्रों से शैक्षणिक और पेशेवर सफर को साझा किया

एमडीयू माइक्रोबायोलॉजी विभाग में एलुमनाई इंटरेक्शन सत्र आयोजित

रोहतक। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय (एमडीयू) के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में 14 विभाग के पूर्व छात्र डॉ. सुमित (बैच 2010–2012) का एलुमनाई इंटरेक्शन सत्र आयोजित किया गया। विभाग के दूसरे बैच के उल्लेखनीय छात्र रहे डॉ. सुमित वर्तमान में एक प्रमुख संस्थान में आरएंडडी हेड के रूप में कार्यरत हैं। सत्र के दौरान डॉ. सुमित ने विद्यार्थियों और शोधार्थियों से संवाद कर अपने शैक्षणिक और पेशेवर सफर को साझा किया। उन्होंने एमएससी माइक्रोबायोलॉजी से लेकर एम्स से पीएचडी पूर्ण करने और उसके बाद अनुसंधान एवं विकास प्रमुख बनने तक के अनुभवों पर प्रकाश डाला।

परेशानी पुल पर आरसीसी स्लैब लगाने के लिए सात घंटे संचालन बंद रहेगा

दिल्ली–रोहतक रेल मार्ग पर 19 नवंबर को मेगा ब्लॉक, कई ट्रेनें रद्द और कुछ का रूट बदला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

दिल्ली रोहतक रेल मार्ग पर बहादुरगढ़ और आसौदा स्टेशन के बीच स्थित पुल संख्या 62 पर आरसीसी स्लैब रखने का काम 19 नवंबर को प्रस्तावित है। इस महत्वपूर्ण निर्माण कार्य के चलते रेलवे ने सुबह 10:15 बजे से शाम 5:45 बजे तक साढ़े सात घंटे का मेगा ब्लॉक घोषित किया है। इस अवधि में इस रूट पर रेल सेवाएं पूरी तरह बाधित रहेंगी। रेल यातायात रोकने के निर्णय से कई ट्रेनों को रद्द करने और कुछ का मार्ग परिवर्तित करने की व्यवस्था की गई है।

कुछ ट्रेनों को रोहतक तक सीमित किया

रेलवे अधिकारियों के अनुसार, मेगा ब्लॉक की शुरुआत पातालकोट एक्सप्रेस (20424) और दिल्ली सराय रोहिल्ला–बठिंडा इंटरसिटी (20409) के बहादुरगढ़ से गुजरने के बाद की जाएगी। इसके बाद इस सेक्शन में यातायात पूरी तरह बंद रहेगा। 19 नवंबर को रोहतक–दिल्ली ईएमयू (64912) और डीजे पैसेंजर (54032) को रद्द रखने का फैसला किया गया है। किसान एक्सप्रेस 14732 को रोहतक तक सीमित किया जाएगा और यह दिल्ली नहीं जाएगी। इसी प्रकार इंटरसिटी एक्सप्रेस 12482 भी रोहतक से आगे नहीं चलेगी। अंडमान एक्सप्रेस 16032 को रोहतक न भेजकर गोहाना–सोनीपत के रास्ते नई दिल्ली ले जाया जाएगा। इसके अतिरिक्त जींद–दिल्ली ईएमयू 64932, दिल्ली–रोहतक ईएमयू 64915, दिल्ली–जींद पैसेंजर 54031 और बरेली इंटरसिटी 14323/24 दोनों दिशाओं में रद्द रहेंगी। किसान एक्सप्रेस 14731 रोहतक से ही बनेगी और वहीं से इसका प्रस्थान होगा। इंटरसिटी एक्सप्रेस 12481 भी रोहतक से चलने का शेड्यूल तय किया गया है। जाखल पैसेंजर 54035 और दिल्ली–जींद ईएमयू 64931 को भी रद्द किया गया है। अवध–आसम एक्सप्रेस को शकूरबस्ती घेवरा के बीच लगभग 50 मिनट के लिए रोका जाएगा।

यात्री समिति ने जताई चिंता

दैनिक रेल यात्री समिति के प्रवक्ता सतपाल हाडा ने आरोप लगाया कि रेलवे कई बार बिना पर्याप्त पूर्व सूचना के ट्रैक मरम्मत कार्य शुरू कर देता है, जिससे यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। समस्या को एक्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से उठाया, जिसके बाद दिल्ली मंडल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों को यात्रियों के लिए पहले से सूचना जारी करने के निर्देश दिए। हाडा ने कहा कि 18 और 19 नवंबर को ब्लॉक के चलते यात्रियों की भीड़ बढ़ने की संभावना है।

शेयर बाजार Vs एसआईपी बेहतर है कौन

प्लानिंग | बिजनेस डेस्क

अगर आप भी एक नए निवेशक हैं और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरुआत करनी चाहिए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं।

पैसों का निवेश जरूरी

पैसों का निवेश करना बहुत ही जरूरी होता है। ऐसे में हर व्यक्ति को अपनी बचत को एक अच्छी जगह निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपनी वेल्थ को बढ़ा सकें। पैसों को निवेश करने के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। कुछ लोग सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं, जिसके लिए वह बैंक एफडी और स्मॉल सेविंग स्कीम में अपने पैसों का निवेश करते हैं। वहीं कुछ लोग ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए रिस्क लेते हैं और शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में अपने पैसों का निवेश करते हैं। अगर आप भी एक नए निवेशक हैं, और अपने पैसों को शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले आपको दोनों में से कहां से शुरुआत करनी चाहिए. आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं।

आइए जानते हैं नए निवेशक कहां से शुरू करें निवेश

बात करें शेयर बाजार में निवेश की तो शेयर बाजार में निवेश काफी रिस्क भरा होता है। किसी भी कंपनी के शेयर खरीदने पर आपको कितना रिटर्न मिलेगा, यह सीधा शेयर की कीमत पर निर्भर करता है। शेयर की कीमत बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है। कीमत घटने पर आपको नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको कंपनी के कारोबार, बैलेंस शीट और सेक्टर ट्रेंड्स की समझ जरूर होनी चाहिए। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले आपको म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए।

नए निवेशकों के लिए म्यूचुअल फंड बेस्ट

अब बात कर लेते हैं म्यूचुअल फंड में निवेश की, तो शेयर बाजार में पहले न निवेश कर आपको सबसे पहले एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए। म्यूचुअल फंड के जरिए भी आपके पैसे शेयर बाजार में ही लगाए जाते हैं लेकिन यह पैसे कब और कैसे और कितना लगाना है, यह फंड मैनेजर तय करते हैं। एसआईपी में आप बस हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करते हैं। लंबे समय तक निवेश कर आप यहां औसतन 12 प्रतिशत की दर से रिटर्न पा सकते हैं। शुरुआत में म्यूचुअल फंड में निवेश कर आप बाजार की चाल को समझ सकते हैं और आपको शेयर बाजार की समझ भी होगी। ऐसे में शेयर बाजार में निवेश करने से पहले एक बार म्यूचुअल फंड में निवेश जरूर करें।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।'

अनजाने और अनचाहे खर्च को रोकना होगा, मिडिल क्लास को नहीं रहेगी टेंशन

सैलरी मिलने के कुछ दिन बाद ही पर्स हो जाता है खाली, ये टिप्स आएंगे काम

उदाहरण से समझें : रिया 90,000 रुपये महीना कमाती है। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती है। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है।

महीने की शुरुआत में जब फोन पर सैलरी अकाउंट में क्रेडिट होने का मैसेज आता है तो काफी खुशी होती है। लेकिन यह खुशी कुछ दिनों तक ही रहती है। 15-20 दिन गुजरने के बाद आर्थिक तंगी के हालात शुरू हो जाते हैं। ऐसा काफी लोगों के साथ होता है। मिडिल क्लास के साथ तो लगभग हर महीने यही स्थिति रहती है। 15-20 दिन बीतने के बाद चिंता सताने लगती है कि आखिर सैलरी का पैसा कहां खर्च हो गया? एक्सपर्ट ने कुछ सुझाव दिए हैं जिसमें इसका कारण और समाधान भी बताया है गया है। एक्सपर्ट के अनुसार हमसे कुछ अनजाने और अनचाहे खर्च ऐसे हो जाते हैं जिनके कारण धीरे-धीरे सैलरी का पैसा खर्च होना शुरू हो जाता है। हालात कई बार ऐसे आ जाते हैं कि सैलरी मिलने के 20 दिन बाद ही बटुआ खाली हो जाता है। समस्या यह नहीं है कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि यह है कि आप उस पैसे को कैसे मैनेज करते हैं।

कहां गया सारा पैसा?

एक्सपर्ट्स के मुताबिक 'आपकी सैलरी अभी-अभी क्रेडिट हुई है। वो खुशी वाला अलर्ट देखकर मुस्कान आ जाती है, है ना? लेकिन 20 दिन बाद आपका यूपीआई बैलेंस आपको सोचने पर मजबूर कर देता है- सारा पैसा कहां गया? यह कहानी कई मिडिल क्लास भारतीयों की है।'

आपकी लाइफ कैसी होगी यह आपके कमाने पर निर्भर नहीं होता है, बल्कि यह निर्भर करता है कि आप बचाते कितना है। उन्होंने लिखा है, 'आप 80 हजार रुपये या 2 लाख रुपये महीना कमाएं। बिना किसी सही मनी प्लान के यह पैसा आपकी सोच से भी तेज गायब हो जाता है।' उन्होंने आगे कहा कि दौलत सिर्फ कमाई से नहीं, बल्कि मैनेजमेंट और लगातार कोशिशों से बनती है।

उदाहरण से समझें गणित

अपनी बात को समझाने के लिए हम एक उदाहरण का सहारा लेते हैं। एक लड़की रिया जो एक कंसल्टेंट हैं और 90,000 रुपये महीना कमाती हैं। वह हर महीने लगभग 20,000 रुपये सिर्फ रोज की कॉफी, लंच, स्नैक्स और वीकेंड पर बाहर घूमने में खर्च कर देती हैं। यह साल का 2.4 लाख रुपये हो जाता है। अगर इसकी आधी रकम भी 11% सालाना रिटर्न के साथ निवेश की जाए तो पांच साल में 8.4 लाख रुपये का फंड बन सकता है। छोटे-छोटे फैसले चुपके से बड़ी दौलत बन जाते हैं।

आखिर क्यों 'गायब' हो जाती है सैलरी

सैलरी गायब होने के पीछे असली वजह अनकॉन्शियस स्पेंडिंग यानी ऐसे खर्च है जो अनजाने में होता है। कई बार ऐसे छोटे खर्चे होते हैं जिन पर ध्यान नहीं दिया जाता। उनके मुताबिक हमारा दिमाग बड़े खर्चे पहचान लेता है लेकिन छोटे खर्चे जैसे- रोजाना का खर्च, सब्सक्रिप्शन, अचानक कुछ खरीदना आदि खर्च का पता ही नहीं चलता। इस कारण हर महीने 25 से 40 हजार रुपये चुपके से खर्च हो जाते हैं। यही कारण है कि सैलरी आने के बाद महीना खत्म होने से पहले ही बटुआ खाली हो जाता है।

ये हैं काम के टिप्स

ऐसे अनचाहे खर्च को रोकने और पैसे पर कंट्रोल के लिए 4 टिप्स हैं। अपनी सैलरी की तरह हर महीने बचत को ऑटोमेटिक कर लें। इसके लिए किसी मुश्किल अकाउंट की जरूरत नहीं है। **बस 4 आसान पॉकेट बना लें।**

ये इस प्रकार हैं :

1. सैलरी हब : यह आपका मुख्य इनकम अकाउंट है। यानी आपकी सैलरी इसी अकाउंट में आती है।
2. सेफ्टी नेट : इसमें इमरजेंसी फंड और लक्ष्य-आधारित बचत के लिए पैसा रखें। यह रकम 60:40 के रेश्यो में होनी चाहिए।
3. ग्रोथ इंजन : यह अकाउंट सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) और ऑटोमेटेड इन्वेस्टमेंट के लिए है।
4. डेली एक्सपेंसेस: यह अकाउंट यूपीआई और बिल पेमेंट के लिए है। यह आपकी सेविंग से अलग होगा।

टाइमिंग का रखें ध्यान

ऊपर बताए चार पॉकेट में पैसा समय पर इन्वेस्ट कर दें। यहां टाइमिंग बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि ज्यादातर लोगों की सैलरी महीने की आखिरी तारीख (30 या 31) या 1 तारीख को आ जाती है। ऐसे में हर महीने की 2 तारीख को ऑटोमेटिक ट्रांसफर सेट करें। महीने के बीच में खर्चों की समीक्षा करें और 25 तारीख तक अगले महीने की तैयारी कर लें।

ये तीन मंत्र काम के

पैसा कमाना एक स्किल है। पैसा बचाना एक आर्ट है और पैसे को कंपाउंड करना (ब्याज पर ब्याज कमाना) साइंस है। इन तीनों में महारत हासिल करें। ऐसे में फाइनेंशियल फ्रीडम अपने आप मिल जाएगी। पैसे का सही प्रयोग ही हमें जल्दी अमीर बना सकता है।

एक लाख 3 साल की एफडी में निवेश करने पर कौन सा बैंक दे रहा है सबसे ज्यादा रिटर्न

नॉलेज | बिजनेस डेस्क

"आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं। आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं. आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं। जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है, तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को बैंक एफडी में ही निवेश करना पसंद करते हैं. इसका कारण एफडी में मिलने वाला फिक्स्ड रिटर्न और पैसों की सुरक्षा है. देश के अलग अलग बैंकों द्वारा अपनी अलग अलग अवधि वाली एफडी पर अलग अलग ब्याज दर से रिटर्न ऑफर किया जाता है. आज हम आपको देश के अलग अलग बैंकों की 3 साल की अवधि वाली एफडी और उनमें मिलने वाले रिटर्न के बारे में बताने वाले हैं. आइए जानते हैं देश के कौन से बैंक में आप 3 साल की एफडी में निवेश कर ज्यादा रिटर्न पा सकते हैं।

प्राइवेट बैंक इंडसइंड बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में सबसे ज्यादा ब्याज दर से रिटर्न ऑफर कर रहा है। इस बैंक की 3 साल की एफडी की ब्याज दरें 6.65 प्रतिशत हैं। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,950 रुपये मिलेंगे।

एक्सिस बैंक की 3 वर्ष की एफडी

प्राइवेट बैंक एक्सिस बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.60 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,800 रुपये मिलेंगे।

एचडीएफसी की 3 वर्ष की एफडी

प्राइवेट बैंक एचडीएफसी बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.40 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,19,200 रुपये मिलेंगे।

एसबीआई की 3 साल की एफडी

सरकारी बैंक एसबीआई अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.30 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,900 रुपये मिलेंगे

केनरा बैंक की 3 वर्षीय एफडी

सरकारी बैंक केनरा बैंक अपनी 3 साल की अवधि वाली एफडी में 6.25 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न ऑफर करता है। ऐसे में अगर आप इस एफडी में 1 लाख रुपये निवेश करते हैं तो आपको मैच्योरिटी पर कुल 1,18,750 रुपये मिलेंगे।

एफडी के अलावा इन 5 सरकारी स्कीम में करें पैसों का सुरक्षित निवेश

बैंक एफडी के अलावा भी सुरक्षित निवेश के लिए कई सारे विकल्प मौजूद हैं। एफडी के अलावा आप सरकार की स्मॉल सेविंग स्कीम में अपने पैसों का निवेश कर सकते हैं। आइए जानते हैं।

जब भी पैसों को निवेश करने की बात आती है तो ज्यादातर लोग अपने पैसों को केवल बैंक एफडी में ही निवेश करते हैं क्योंकि बैंक एफडी में पैसा सुरक्षित रहता है यानी पैसों के खो जाने का कोई डर नहीं होता है लेकिन बैंक एफडी के अलावा भी ऐसी कई स्कीम हैं, जहां लोग अपने पैसों को सुरक्षित तरीके से निवेश कर सकते हैं और काफी अच्छा रिटर्न पा सकते हैं। हम बात कर रहे हैं सरकार की स्मॉल सेविंग स्कीम के बारे में। स्मॉल सेविंग स्कीम में आपको एक निश्चित ब्याज दर से रिटर्न मिलता है, और यह सरकारी स्कीम है. ऐसे में आपको पैसों की पूरी सुरक्षा भी मिलेगी। आइए जानते हैं बैंक एफडी के अलावा आप किस-किस सरकारी स्कीम में पैसों का निवेश कर सकते हैं

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट यानी एनएससी पोस्ट ऑफिस की सरकारी स्कीम है, जहां आपको 5 साल की अवधि के लिए अपने पैसों का निवेश करना होता है। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट में आपको 7.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम

अगर आपकी उम्र 60 साल से अधिक है तो आप सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम में 5 सालों के लिए अपने पैसों को निवेश कर सकते हैं। इस स्कीम में 8.2 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है। यहां आप अधिकतम 30 लाख रुपये का निवेश कर सकते हैं।

पोस्ट ऑफिस आरडी

अगर आप एक साथ निवेश न कर थोड़ा थोड़ा निवेश करना चाहते हैं तो आप पोस्ट ऑफिस की आरडी में निवेश कर सकते हैं. यहां आपको हर महीने एक निश्चित रकम निवेश करनी होती है. इस स्कीम का मैच्योरिटी पीरियड 5 साल का होता है। आरडी में 6.7 प्रतिशत की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है।

किसान विकास पत्र

पोस्ट ऑफिस की किसान विकास पत्र यानी केवीपी स्कीम में आप अपने पैसों को 115 महीनों के लिए निवेश करके उन्हें डबल बना सकते हैं। किसान विकास पत्र स्कीम में 7.5 प्रतिशत सालाना की ब्याज दर से रिटर्न मिलता है. ऐसे में आप यहां भी निवेश कर सकते हैं।

स्मार्ट निवेशक ऐसे पहचानते हैं म्यूचुअल फंड बेचने का सही वक्त

सुझाव
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में इन्वेस्टमेंट करने की बात तो हर निवेशक करता है, कौन सा फंडसबसे अच्छा है, कौन सा फंड मैनेजर बेहतर रिटर्न दे रहा है, या कौन सी स्कीम में पैसा लगाना चाहिए। हालांकि जब बात आती है म्यूचुअल फंड बेचने की, तो ज्यादातर लोग या तो गलत समय पर बेच देते हैं या फिर कभी बेचते ही नहीं, जबकि सच यह है कि जितना जरूरी इन्वेस्टमेंट करना है, उतना ही जरूरी है सही समय पर बेचना भी। अगर आप यह नहीं जानते कि म्यूचुअल फंड कब बेचना चाहिए, तो आपका अच्छा फंड भी नुकसान में बदल सकता है। अक्सर ऐसा होता है कि मार्केट में गिरावट आते ही निवेशक घबरा जाते हैं और अपने फंड को बेच देते हैं। यह सबसे आम लेकिन सबसे बड़ी गलती होती है। जैसे कि 2008 के वित्तीय संकट के दौरान कई निवेशकों ने डरकर अपने फंड बेच दिए थे, लेकिन उस टाइम पर अगर उन्होंने धैर्य रखा होता, तो अगले पांच सालों में उनकी रकम दोगुनी हो सकती थी, तो इसलिए, मार्केट गिरने पर डरकर फंड बेचना नहीं, बल्कि धैर्य रखना जरूरी होता है।

गलत समय पर म्यूचुअल फंड बेचने से हो सकता है भारी नुकसान

कब नहीं बेचना चाहिए?

कई बार फंड कुछ महीनों के लिए खराब प्रदर्शन करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि फंड खराब है। हर इन्वेस्टमेंट प्रोडक्शन के उतार-चढ़ाव के चक्र होते हैं। अगर आपने किसी उद्देश्य के लिए निवेश किया है, जैसे बच्चे की पढ़ाई, शादी या रिटायरमेंट, तो बीच में फंड बेचने की गलती न करें। इसके अलावा, सिर्फ इसलिए फंड न बेचें क्योंकि आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार किसी नए फंड में निवेश कर रहा है। वैसे निवेशकों को औसतन करीब 3-4% कम रिटर्न मिल सकता है क्योंकि वे गलत समय पर फंड बेच देते हैं, यानी निवेशक खुद अपने नुकसान के जिम्मेदार बन जाते हैं।

कब बेचना चाहिए फंड?

म्यूचुअल फंड में निवेश जितना जरूरी है, उतना ही अहम है सही समय पर उसे बेचना। फंड को बेचना किसी जल्दबाजी का नहीं बल्कि एक रणनीतिक फैसला होना चाहिए। अगर आपका फाइनेंशियल टारगेट जैसे बच्चे की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट पूरा हो गया है, तो मुनाफा बुक कर लेना समझदारी है। वहीं, अगर कोई फंड लगातार 2-3 साल से खराब प्रदर्शन कर रहा है या अपने बेंचमार्क से पिछड़ रहा है, तो इसे बदलने का समय आ गया है। जिंदगी में फाइनेंशियल बदलाव जैसे नौकरी छूटना या रिटायरमेंट की स्थिति में जोखिम कम करना चाहिए। इसके अलावा, जब मार्केट ऊंचाई पर हो, तब आंशिक मुनाफा निकालकर अपनी पूंजी सुरक्षित करना बेहतर प्लानिंग मानी जाती है।

फंड बेचने से पहले ये रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड बेचने से पहले जल्दबाजी में कोई कदम उठाना नुकसानदायक हो सकता है। सबसे पहले अपने फंड की पूरी समीक्षा करें, क्या फंड मैनेजर, निवेश प्लानिंग या खर्च संरचना में कोई बड़ा बदलाव हुआ है? अगर हां, तो स्थिति को समझकर निर्णय लें। किसी भी कदम से पहले अपने फाइनेंशियल सलाहकार की राय जरूर लें, ताकि नुकसान से बचा जा सके। तो याद रखें, म्यूचुअल फंड एक लॉन्ग-टर्म इन्वेस्टमेंट है इसलिए बाजार के उतार-चढ़ाव में घबराने की बजाय धैर्य रखें और अपनी वित्तीय योजना से भटकें नहीं। भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच इसका आकार 64.96 लाख करोड़ से बढ़कर 75.35 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को पेश करता है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में जबरदस्त ग्रोथ

भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री लगातार तेजी से आगे बढ़ रही है। जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के बीच इसका आकार 64.96 लाख करोड़ से बढ़कर 75.35 लाख करोड़ तक पहुंच गया है, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को पेश करता है। यह साबित करता है कि लोग अब पारंपरिक निवेश की बजाय म्यूचुअल फंड्स को दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण का साधन मान रहे हैं। हालांकि, केवल निवेश करना ही काफी नहीं है। सही समय पर फंड बेचना भी एक समझदार निवेशक की पहचान होती है। बाजार की स्थिति, अपने लक्ष्य और फंड के प्रदर्शन को समझकर निर्णय लेना ही सफल निवेश की कुंजी है।

सही डिसीजन पर टिका है म्यूचुअल फंड

म्यूचुअल फंड में असली सफलता सिर्फ अच्छे फंड चुनने से नहीं, बल्कि सही समय पर निर्णय लेने से आती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य है, इसलिए गिरावट से घबराने की बजाय अपने फाइनेंशियल टारगेट पर फोकस रखें। समय पर फंड बेचना न सिर्फ आपकी पूंजी बचाता है, बल्कि मुनाफे को भी दोगुना कर सकता है।

खबर संक्षेप

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते मुख्य वक्ता।

बिरसा मुंडा के जीवन संघर्ष को याद किया

रोहतक। बिरसा मुंडा जयंती एवं जनजातीय गौरव पखवाड़ा के उपलक्ष्य में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मदीना में आज एक भव्य विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय ग्रामीण समुदाय, शिक्षक तथा विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) मदीना के प्रधानाचार्य वीरेंद्र कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा पूरे कार्यक्रम का मार्गदर्शन खंड शिक्षा अधिकारी सरिता खनगवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसके पश्चात उनके जीवन, संघर्ष, सामाजिक योगदान तथा जनजातीय अधिकारों के लिए किए गए ऐतिहासिक आंदोलनों पर आधारित विविध प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं, जिनमें शिक्षकों ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई। एनसीईआरटी द्वारा निर्मित बिरसा मुंडा पर आधारित प्रेरणादायक चलचित्र का प्रदर्शन किया गया।

शिक्षकों ने प्रस्तुत किए नवाचारपूर्ण प्रेजेंटेशन

वर्चुअल लैब्स प्रशिक्षण शिविर में 50 शिक्षकों ने सीखा तकनीक का ज्ञान

एससीईआरटी गुरुग्राम ने विकसित प्रशिक्षक पोर्टल पर पोस्ट-ट्रेनिंग टेस्ट आयोजित किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

डाइट प्राचार्य वीरेंद्र मलिक के निर्देशन में 11 नवंबर से आयोजित पांच दिवसीय वर्चुअल लैब्स प्रशिक्षण शिविर का समापन उत्साह और उपलब्धियों के साथ हुआ। इस प्रशिक्षण में रोहतक ज़िले के विभिन्न सरकारी विद्यालयों से 50 शिक्षकों ने भाग लिया।

शिविर का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को ऐसी शिक्षण विधियां सिखाना था, जिनसे वे बिना भौतिक प्रयोगशालाओं के भी प्रयोग आधारित शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू कर सकें। साथ ही नई शिक्षा नीति के अनुरूप रोचक एवं नवाचार-आधारित शिक्षण सामग्री तैयार करने के व्यवहारिक तरीके भी सिखाए गए। इस प्रशिक्षण शिविर को सफल बनाने में डाइट प्राचार्य वीरेंद्र मलिक के साथ ट्रेनिंग कोऑर्डिनेटर जितेंद्र कुमार, मास्टर ट्रेनर सुमित सहरावत और अनिल कौशिक तथा डॉ. अलका मदान का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण सत्रों में डॉ. मंजीत और डॉ. सुमन की भी सक्रिय भूमिका रही, जिन्होंने शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों और वर्चुअल लैब्स के उपयोग से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।पांच दिनों तक चले इस गहन प्रशिक्षण में गणित और विज्ञान विषय के 50 पीजीटी शिक्षकों ने सहभागिता की। प्रशिक्षण से शिक्षकों को वर्चुअल मॉडल, डिजिटल सिमुलेशन, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ तथा तकनीक-आधारित शिक्षण उपकरणों का उपयोग करने के नए तरीके सीखने का अवसर मिला। इससे उनकी कक्षा शिक्षण पद्धति अधिक प्रभावी और विद्यार्थी-केंद्रित बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा है।

रोहतक। प्रशिक्षण में भाग लेते शिक्षक-शिक्षिकाएं। फोटो : हरिभूमि

शिक्षकों ने विभिन्न आयामों को समझा

प्रशिक्षण के अंतिम दिन एससीईआरटी गुरुग्राम द्वारा विकसित प्रशिक्षक पोर्टल पर सभी प्रतिभागियों का पोस्ट-ट्रेनिंग टेस्ट आयोजित किया गया। इस मूल्यांकन के माध्यम से यह समझा जा सका कि शिक्षकों ने प्रशिक्षण के विभिन्न आयामों को कितना प्रभावी तरीके से आत्मसात किया। टेस्ट के बाद आयोजित प्रस्तुति सत्र इस प्रशिक्षण की मुख्य आकर्षक कड़ी रहा, जिसमें शिक्षकों ने केनवा और पावरपॉइंट के माध्यम से तैयार किए गए अपने प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किए। प्रत्येक प्रतिभागी शिक्षक ने अपने अनुभव साझा किए और बताया कि वे प्रशिक्षण के दौरान सीखी गई गतिविधियों, तकनीकों और वर्चुअल प्रयोगों को अपनी कक्षाओं में कैसे लागू करेंगे।

शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण रहा प्रेरणादायक

शिक्षकों ने माना कि यह प्रशिक्षण उनके लिए प्रेरणादायक रहा, जिसने उन्हें तकनीक के जिम्मेदार और प्रभावी उपयोग के लिए तैयार किया है। वर्चुअल लैब्स की यह पहल शिक्षण गुणवत्ता में सुधार, नवाचार को बढ़ावा देने तथा विद्यार्थियों को भविष्य की तकनीकी दुनिया से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

जीडी गोयनका में बाल दिवस मनाया

- कार्यक्रम बच्चों के लिए आनंद और सीख दोनों का संगम रहा
- बच्चों ने अपनी शानदार प्रतिभा से किया आकर्षित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जीडी गोयनका टॉडलर हाउस, सनसिटी 36 रोहतक में बाल दिवस के अवसर पर बच्चों के अधिकारों, खुशियों और देश के भविष्य के रूप में उनकी भूमिका को समर्पित भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह दिवस पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर मनाया जाता है, जिन्हें बच्चों के प्रति प्रेम के कारण चाचा नेहरू के नाम से जाना जाता है। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं, साथ ही भाषण, कला और शिल्प जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें बच्चों ने अपनी प्रतिभा और कल्पनाशक्ति का शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय द्वारा 14 अक्टूबर को बच्चों के लिए एक शिक्षात्मक और आनंद यात्रा का भी आयोजन किया जाएगा, जिसे बाल दिवस का विशेष उपहार निदेशक बलराज सिंह और प्रधानाचार्या अनामिका बल्हारा की ओर से घोषित किया गया।

रोहतक। बालदिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभा करते विद्यार्थी।

बच्चों को पंडित नेहरू के विचारों से अवगत कराया

प्रधानाचार्या अनामिका बल्हारा ने बच्चों को पंडित नेहरू के विचारों से अवगत कराया और बताया कि नेहरू बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और अधिकारों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे। उन्होंने कहा कि बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं और उनका दायित्व है कि उन्हें सुरक्षित और खुशहाल वातावरण उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने बच्चों को मेहनत और लगन से अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम बच्चों के लिए आनंद और सीख दोनों का सुंदर संगम रहा, साथ ही उन्हें समाज में अपनी भूमिका और अधिकारों के प्रति जागरूक भी किया।

वंदे मातरम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर कार्यक्रम

रोहतक। महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय में वंदे मातरम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर राष्ट्रव्यापी उत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। आयोजित इस विशेष कार्यक्रम की शुरुआत महाविद्यालय परिसर में सभी छात्राओं द्वारा एक स्वर में वंदे मातरम् गान से हुई, जिससे वातावरण देशभक्ति की भावना से गूंज उठा।

कार्यक्रम के तहत छात्राओं ने मानव श्रृंखला बनाकर राष्ट्रीय एकता, सामूहिक शक्ति और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। मानव श्रृंखला के दौरान छात्राओं ने राष्ट्रगीत को सामूहिक रूप से दोहराते हुए देश के प्रति सम्मान और उत्साह का प्रदर्शन किया। इस आयोजन का सफल संचालन एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर सोफिया जाखड़ और वाणिज्य विभाग की सहायक प्रोफेसर रेखा के मार्गदर्शन में हुआ। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. रश्मि लोहचब ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रबल करते हैं और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं।

महम। बाल दिवस कार्यक्रम में भाग लेने वाले एचडी स्कूल खेड़ी महम के बच्चे अपने गुरुजनों के संग। फोटो : हरिभूमि

एचडी स्कूल खेड़ी महम में बच्चों ने हर्षोल्लास से मनाया बाल दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

एचडी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल खेड़ी महम में बाल-दिवस बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। स्कूल प्राचार्या शालिनी गुप्ता ने बताया कि इस दिन बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के क्रिया कलाप आयोजित किए गए। कक्षा पहली से पांचवी के बच्चों के लिए विशेष बाल- सभा का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने चुटकुले, कविता, डांस, सॉन्ग इत्यादि के माध्यम से सभी का मनोरंजन किया। कक्षा नर्सरी से फर्स्ट के बच्चों के लिए म्यूजिकल चेयर व थ्रू द बॉल एक्टिविटी आयोजित की गई। नर्सरी व केजी कक्षा के बच्चों के लिए विशेष फूड स्टाल भी लगाए गए। इस मौके पर सीनियर लड़कों के लिए क्रिकेट मैच का भी आयोजन किया गया। जो बड़े ही मैत्री पूर्ण माहौल में खेला गया। इस मौके पर स्कूल प्राचार्या शालिनी गुप्ता व उपप्राचार्या इंदु नेहरा ने अपने संबोधन में कहा कि बच्चे ही वह मिट्टी हैं जिससे भविष्य की इमारत तैयार होती है। इस अवसर पर स्कूल निदेशक कुलवंत नेहरा व स्कूल सचिव संजीव छिल्लर ने सभी को बाल- दिवस की शुभकामनाएं दी।

न्यूज डायरी

बाल दिवस पर बचपन प्ले स्कूल में खेलों का आयोजन

रोहतक। बाल दिवस के अवसर पर बचपन प्ले स्कूल, वसंत विहार में खेल-कूद प्रतियोगिता का उत्साहपूर्ण आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों की बॉल ड्रिल प्रस्तुति से हुई, जिसमें छोटे बच्चों ने तालबद्ध गतिविधियों के साथ अपने कौशल का सुंदर प्रदर्शन किया। इसके बाद पिक द बॉल, बुक बैलेंसिंग और हर्डल रेस जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं में अलग-अलग कक्षाओं के विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान बच्चों में उत्साह और प्रतियोगिता का जोश देखने को मिला। खेलों के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, टीम वर्क और शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने का उद्देश्य सफल रहा। आयोजन में प्रबंधक डॉ. अशोक दुहन, डॉ. सुनीता दुहन, प्रधानाचार्या सोनिया नागपाल तथा सभी अध्यापकगण उपस्थित रहे और बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

राजकीय महिला पीजी कालेज में हुई योग कार्यशाला

रोहतक। राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ एवं योग शिक्षक देवेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में 12 दिवसीय योग एवं ध्यान कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला में 50 छात्राओं ने भाग लिया और पूरे उत्साह के साथ विभिन्न योगिक गतिविधियों का अभ्यास किया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा देना रहा। कार्यशाला के दौरान छात्राओं को प्राणायाम, आसन, ध्यान और तनाव प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों का अभ्यास करवाया गया। योग शिक्षक देवेंद्र सिंह ने दैनिक जीवन में योग के महत्व, उसके स्वास्थ्य लाभों और सकारात्मक जीवनशैली पर विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि नियमित योगाभ्यास न केवल तनाव कम करता है बल्कि एकाग्रता और आत्मविश्वास भी बढ़ाता है।

टैलेंट ट्री स्कूल में बाल दिवस पर मचाया धमाल

महम। टैलेंट ट्री स्कूल महम में बाल दिवस पर एक भव्य मुख्य सभा का आयोजन किया गया। बच्चों के प्रिय चाचा जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को समर्पित इस दिन को खास बनाने के लिए स्कूल के अध्यापकों ने विद्यार्थियों के लिए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस विशेष आयोजन में शिक्षकों व विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन, भाषण, और मूल्य आधारित प्रेरक गतिविधियां प्रस्तुत कीं। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य बच्चों के सर्वांगीण विकास, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना और नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करना था। सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों ने इस उत्साहवर्धक आयोजन का भरपूर आनंद लिया।

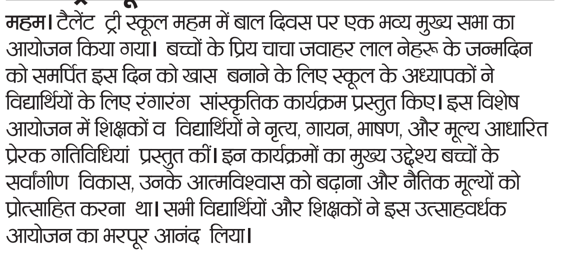

पठानिया पब्लिक स्कूल में कम्प्यूटर प्रतियोगिता आयोजित

रोहतक। पठानिया पब्लिक स्कूल में कक्षा पहली से तीसरी तक के विद्यार्थियों के लिए कम्प्यूटर प्रोवैस प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में लगभग 300 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में कम्प्यूटर ज्ञान के साथ-साथ डिजिटल और तकनीकी कौशल को बढ़ावा देना था। प्रतियोगिता का संचालन शिक्षिकाओं आंचल और अनु सांगवान द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के दौरान बच्चों ने टक्स-पेंट सॉफ्टवेयर में अपनी रचनात्मकता का शानदार प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने दैनिक उपयोग की वस्तुएं, गांव का दृश्य, रेलगाड़ी, सड़क किनारे का चित्र, फूल, जोकर और आइसक्रीम कोन जैसे आकर्षक चित्र बनाकर सभी का मन मोह लिया।

लोकल फॉर ग्लोबल के माध्यम से भारत एक बार फिर बनेगा विश्व गुरु: डॉ आदित्य बत्रा

- स्थानीय उद्योग भारत को विश्व शक्ति बनाने में निभाएंगे अहम भूमिका : रणवीर ढाका

भूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम पर एक प्रबुद्धजन सम्मेलन जिलाध्यक्ष एडवोकेट रणवीर सिंह ढाका की अध्यक्षता में जिला विकास भवन में सम्पन्न हुई । बैठक का उद्देश्य आत्मनिर्भर भारत अभियान को मजबूती देना रहा । बैठक में मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ आदित्य बत्रा रहे और सह वक्ता एडवोकेट राकेश सपरा रहे। बैठक में पार्टी पदाधिकारियों, रोहतक बार के पदाधिकारियों, व्यापार मंडल प्रतिनिधियों, किसान संगठनों के सदस्यों, युवाओं और महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस बैठक का मुख्य लक्ष्य स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन करना, छोटे उद्योगों को बढ़ावा देना, कृषि-आधारित गतिविधियों का विस्तार करना रहा।

खेलकूद प्रतियोगिता में छाए एचडी स्कूल के विद्यार्थी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

एचडी पब्लिक स्कूल में कक्षा तृतीय से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता एवं शपथ ग्रहण/अलंकरण समारोह उत्साह और उमंग के साथ संपन्न हुआ। विद्यालय के चारों सदनों के मध्य खेल प्रतियोगिताएं सौहार्द, अनुशासन और उत्कृष्ट खेल भावना के साथ आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने भरपूर उत्साह से भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत केसरी अवार्ड से सम्मानित, भारतीय वायुसेना में जूनियर वारंट ऑफिसर एवं समाजसेवी, मोखरा निवासी सत्येन्द्र मलिक ने शिरकत कर समारोह की शोभा बढ़ाई। विद्यालय परिवार द्वारा भारतीय परंपरा अनुसार तिलक और पुष्पगुच्छ देकर मुख्य अतिथि का सम्मान किया गया। इसके पश्चात चयनित छात्र-छात्राओं ने शपथ ग्रहण किया। उन्होंने विद्यालय के अनुशासन, सत्यनिष्ठा और नैतिक मूल्यों का पालन करने का संकल्प दोहराया। मुख्य अतिथि सत्येन्द्र मलिक ने अपने अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को निरंतर प्रयास, दृढ़ निश्चय, सकारात्मक सोच और लक्ष्य के प्रति समर्पण का संदेश दिया। खेल प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। छठी से आठवीं वर्ग में 200 मीटर दौड़ (गर्ल्स) में टोपेज हाउस की अंशी विजेता रहीं, जबकि 100 मीटर (गर्ल्स) में एमराल्ड हाउस की मन्नत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर (बॉयज) में एमराल्ड हाउस के वंश और 100 मीटर (बॉयज) में एमराल्ड हाउस के उदित विजेता बने। तीसरी से पाँचवीं कक्षा वर्ग में 200 मीटर (गर्ल्स) में पांचवीं की मानवी और तीसरी की रक्षिका विजेता रहीं।

सीवी राइटिंग और मॉक इंटरव्यू का सफल आयोजन

रोहतक। राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का सफल समापन हुआ। कार्यशाला के अंतिम दिन छात्रों के लिए इंटरव्यू स्किल और मॉक इंटरव्यू के दो महत्वपूर्ण सत्र आयोजित किए गए। तीसरे सत्र का संचालन कुमारी सुचित्रा ने किया, जिन्होंने इंटरव्यू स्किल से जुड़ी आवश्यक गतिविधियों और तकनीकों को विस्तारपूर्वक समझाया। उन्होंने छात्रों को अपनी क्षमताओं की पहचान कर अपनी ताकत और चुनौतियों का सही उपयोग करने की सलाह दी। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि बायोडाटा में केवल वही जानकारी शामिल करनी चाहिए जो वास्तविक हो और व्यक्ति को दूसरों से अलग बनाती हो। अंतिम सत्र में मॉक इंटरव्यू आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों ने आत्मविश्वास और कौशल के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

कॉलेज में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

रोहतक। राजकीय महाविद्यालय जसिया में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता बड़े उत्साह और जोश के साथ आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, बरौदा डॉ. लोकेश बल्हारा ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेलकूद न केवल शारीरिक और मानसिक विकास को बढ़ावा देते हैं, बल्कि अनुशासन, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता भी विकसित करते हैं। एक दिवसीय इस खेल महोत्सव में एथलेटिक्स, लंबी कूद, ऊंची कूद, मटकी दौड़, शॉट पुट, डिस्कस थ्रो सहित कई स्पर्धाएं हुईं, जिनमें छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उत्कृष्ट खिलाड़ियों में साहिल (बीए द्वितीय वर्ष) और योगिता (बीए प्रथम वर्ष) को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया।

मुरथल में हुआ 72वां राज्य स्तरीय सहकारिता सप्ताह समारोह

रोहतक केंद्रीय सहकारी बैंक को मिला दूसरा स्थान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल (सोनीपत) में 72वां राज्य स्तरीय सहकारिता सप्ताह-2025 का भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि भाजपा हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल कौशिक विशिष्ट अतिथि रहे। समारोह की अध्यक्षता सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत एवं पर्यटन मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा ने की। इस अवसर पर दी रोहतक केंद्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड, रोहतक के चेयरमैन हरीश कौशिक भारी जनसमूह के साथ समारोह में शामिल हुए। राज्य के सभी जिला सहकारी बैंकों द्वारा सहकारिता से संबंधित आकर्षक स्टॉल भी लगाए गए, जिनमें सहकारिता मॉडल, योजनाएं और उपलब्धियां प्रदर्शित की गईं। मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल कौशिक और सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा ने संयुक्त रूप से रोहतक केंद्रीय सहकारी बैंक को हरियाणा राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया। चेयरमैन हरीश कौशिक को स्मृतिचिह्न भेंट कर पुरस्कृत किया गया। समारोह में अतिरिक्त मुख्य सचिव, सहकारिता विभाग हरियाणा विजयेंद्र कुमार, उपायुक्त सोनीपत सुषील सरवान , हरको बैंक के प्रबंध निदेशक प्रफुल्ल रंजन, रोहतक केंद्रीय सहकारी बैंक के महाप्रबंधक छैलूराम आदि रहे।

हरिभूमि बम्पर इनामी योजना-2025 के विजेताओं के नाम

ग्यारहवां पुरस्कार (इलैक्ट्रिक कैटल-100 नग)

❖ श्री अजय कुमार सुपुत्र श्री सुंदर लाल, 1910/30, न्यू चिन्योट कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री प्रशांत सुपुत्र प्रमोद, नेहरू कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री मदन गोपाल सचदेवा सुपुत्र मुलखराज सचदेवा, म. नं. 309/16, प्रताप मोहल्ला, रोहतक ❖ जगबीर सुपुत्र श्री देशराज, गांव मोहम्मदपुर, दुलोठ जाट, अटेली, महेन्द्रगढ़ ❖ रोहित बंसल सुपुत्र श्री दीपक बंसल, वार्ड नं. 6, दीवान गेट, झज्जर ❖ जय नारायण सुपुत्र श्री दुर्गा प्रसाद, साल्हावास, झज्जर ❖ दर्शना देवी धर्मपत्नी धर्मबीर सिंह, गांव दुजाना, बेरी, झज्जर ❖ रतन लाल सुपुत्र श्री समसूराम नांगल चौधरी, महेन्द्रगढ़ ❖ श्री रामचंद्र सुपुत्र रामभगत, अमृत कॉलोनी, वार्ड 22, रोहतक ❖ श्री भगत सिंह सुपुत्र श्री बनवारी लाल, नजदीक रेलवे स्टेशन, वार्ड नं. 2, (आटा चक्की) कलानौर, रोहतक ❖ दिव्या सुपुत्री श्री परवीन, जहाजगढ, बेरी, झज्जर ❖ सुरेश कुमार सुपुत्र श्री बलराम, साल्हावास, झज्जर ❖ निहारिका शर्मा पत्नी दीपक शर्मा निवासी 15/40, 5 बिस्वा, जटवाड़ा मोहल्ला, बहादुरगढ़ ❖ महेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री भागचन्द, दुजाना, बेरी, झज्जर ❖ महाबीर सिंह सुपुत्र श्री जागे राम, कबलान, झज्जर ❖ जिया पुत्री श्री अमित निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ शर्मिला पत्नी श्री विरेन्द्र निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ दिलबाग सिंह सुपुत्र श्री जगत सिंह, निवादा, साल्हावास, झज्जर ❖ राधे श्याम सुपुत्र स्व. श्री हजारी लाल, गांव व डा. नन्दरामपुर बांस, रेवाड़ी ❖ मदन लाल वर्मा सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद म. नं.4, गली नं. 3/1, सरस्वती विहार, कालका रोड, रेवाड़ी ❖ प्रिन्स सुपुत्र श्री अमन, मारोत, मातनहेल, झज्जर ❖ श्री रणवीर सिंह सुपुत्र श्री राम, गांव व डा. तुंबाहेड़ी, झज्जर ❖ मामन सिंह सुपुत्र श्री चन्द्रभान, गांव पलड़ा, बेरी, झज्जर ❖ दयानन्द सुपुत्र श्री मंगलराम, गांव लूखी, कोसली, रेवाड़ी ❖ धर्मवीर सिंह सुपुत्र श्री सुरजभान, नारनौल, महेन्द्रगढ़ ❖ अमन सोलंकी पुत्र श्री श्रीपाल सोलंकी, निवासी मकान नं0 2459, सेक्टर 2, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ मधुबाला पत्नी श्री जय भगवान निवासी मकान नं.840/13, गली नं.10 भगत सिंह कालोनी, बहादुरगढ़ ❖ मनोज कुमार पुत्र श्री राजेन्द्र सिंह निवासी गांव डाबौदा कलां, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ तेजबीर राठी पुत्र श्री जागेराम निवासी गांव व डाकखाना सांखौल, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ विनोद कुमार पुत्र श्री मनोहर लाल गांव व डाकखाना सांवड़, जिला चरखी दादरी ❖ रमन सुपुत्र श्री रिंकू, दगड़ौली, बाढड़ा, चरखी दादरी ❖ सुनीता पत्नी मुकेश निवासी रामनगर, परनाला रोड़, गली नं.4, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ सुरेन्द्र कुमार सैन पुत्र श्री सन्जू निवासी गुजरों की ढाणी, पुराना बस स्टैंड, भिवानी ❖ श्री महेंद्र सिंह सुपुत्र खेड़ी सिंह, गांव व ड. भालौठ, रोहतक ❖ मयंक पुत्र श्री जतिन कुमार निवासी गांव हनुमान ढाणी, जिला भिवानी ❖ सुलेखा पत्नी श्री हरिओम निवासी गांव रोहद, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ श्याम करण पुत्र श्री सोनी लाल निवासी छिकारा कालोनी, गली नं.5, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ दयाराम पुत्र श्री कमलेश निवासी आर्य नगर, गली नं.2, बहादुरगढ़, जिला इज्जर ❖ देवेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री राजिन्द्र सिंह, गांव व डा. शेशवाला, दादरी ❖ समीर पुत्र श्री प्रदीप निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ उमेश पुत्र श्री हवा सिंह निवासी 12/410, सैनी पुरा, बहादुरगढ़, जिला झज्जर ❖ हवा सिंह पुत्र श्री लखीराम निवासी गांव व डाकखाना गोयला कलां, बादली, झज्जर ❖ आशीष वर्मा पुत्र श्री बलवान सिंह निवासी सुहासरा, लोहारू, जिला भिवानी ❖ श्री राकेश कुमार सुपुत्र ब्रह्मजीत सिंह, गांव व डा. बोहर, रोहतक ❖ परवीन कुमार सुपुत्र श्री दिलबाग सिंह गांव व डा. लोहारहेड़ी, बहादुरगढ, झज्जर ❖ श्री रवि सुपुत्र हरि सिंह, 822, दरमान मौहल्ला, रोहतक ❖ हर्ष मित्तल पुत्र श्री रविन्द्र कुमार निवासी मकान नं 5, नजदीक लिबर्टी होम्स, शिव नगर कालोनी, भिवानी ❖ श्री अंकुर सुपुत्र श्री रामफल, खरक जाटान, बैंसी, तह. महम, रोहतक ❖ मोहिन्द्र सिंह सुपुत्र श्री कन्हैया लाल, गांव लोहारहेड़ी, बहादुरगढ, झज्जर ❖ वीर भान पुत्र श्री काली चरण निवासी मकान 802/19, आर्य नगर, रोहतक

शेष विजेताओं की सूची अगले अंक में देखें

आवश्यक सूचना :

1. सभी पुरस्कारों का वितरण 1 दिसम्बर 2025 से किया जाएगा।
2. पुरस्कार संख्या 1 से 3 तक के विजेताओं को हरिभूमि मुख्यालय, नजदीक इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
3. पुरस्कार संख्या 4 से 13 उपहार के विजेताओं को संबंधित हरिभूमि कार्यालय अभिकर्ता से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
4. यदि किसी भी पुरस्कार पर सरकार के नियमानुसार टी.डी.एस. लागू होगा तो विजेता को लागू टी.डी.एस. की राशि हरिभूमि कार्यालय में एडवांस में जमा करनी होगी।
5. पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आपको अपने साथ पुरस्कार विजेता की फोटो आईडी की फोटो प्रति जमा करनी होगी। मूल प्रति को मिलान हेतु साथ में लाना अनिवार्य है।
6. अधिक जानकारी के लिए आप निम्न नम्बरों पर हरिभूमि प्रसार विभाग में प्रातः 11.00 से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क कर सकते है :- फोन : 9253681019-20

- कार्यालय पता -

हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20, फोन : 9253681010, 9253681005

खबर संक्षेप

इंटर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता संपन्न

रोहतक। मदवि में आयोजित महिला क्रिकेट इंटर कॉलेज प्रतियोगिता में जाट कॉलेज की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए चैम्पियनशिप अपने नाम की। रोमांचक मुकाबलों से भरी इस प्रतियोगिता में जाट कॉलेज की खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल कौशल, अनुशासन और टीमवर्क का परिचय दिया। फाइनल मैच में टीम ने अपने प्रतिद्वंद्वी को मात देकर ट्रॉफी जीत ली। विजयी खिलाड़ियों और कोच ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह उपलब्धि निरंतर अभ्यास, मेहनत और टीम की एकजुटता का परिणाम है। कॉलेज पहुंचने पर खिलाड़ियों का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया।

भारत विकास परिषद् ने लगाया रक्तदान शिविर

रोहतक। भारत विकास परिषद् जय हिंद शाखा द्वारा आयोजित रक्त दान शिविर में 80 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। शिविर का आयोजन (तिरुपति मल्टीस्पेश्यल्टी हॉस्पिटल) डॉ प्रवीण गोयल, डॉ प्रवीण गर्ग ,डॉ कांता जोला सैनी द्वारा किया गया। इस मौके पर एसडीएम आशीष वशिष्ठ एवं रोडवेज जीएम विपिन शर्मा , दीपक जिंदल व कार्यक्रम संयोजक सुनील जैन मुख्य रूप से मौजूद रहे। परिषद की तरफ से राहुल जैन, मनोज गर्ग, नीरज तायल, अभिषेक गोयल , सुरेश कथूरिया , राजीव गोयल, बृजेश गोयल , संजय तायल , डॉ परवीन गर्ग , मुकेश गुप्ता ,सुनील वर्मा , अनुराग जैन , अमित गोयल , निखिल गुप्ता ,पुलकित गुप्ता आदि रहे।

स्वच्छता को प्राथमिकता, सेकेंडरी प्वाइंट खत्म करने के निर्देश

डीसी ने किया शहर का निरीक्षण, गंदगी देखकर अधिकारियों को लगाई फटकार

डीसी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि शहर में मौजूद गंदगी के सेकेंडरी प्वाइंट्स को तुरंत समाप्त किया जाए, ताकि रोहतक को स्वच्छ और सुंदर शहर के रूप में विकसित किया जा सके।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

शहर के विभिन्न क्षेत्रों में शनिवार को उपायुक्त सचिन गुप्ता ने औचक निरीक्षण कर स्वच्छता व्यवस्था का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान कई जगह गंदगी मिलने पर उन्होंने नगर निगम अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाई और कहा कि स्वच्छता व्यवस्था में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। डीसी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि शहर में मौजूद गंदगी के सेकेंडरी प्वाइंट्स को तुरंत समाप्त किया जाए, ताकि रोहतक को स्वच्छ और सुंदर शहर के रूप में विकसित किया जा सके।

स्वच्छता अभियान के सकारात्मक परिणाम

डीसी सचिन गुप्ता ने बताया कि लगभग दो महीने पहले नगर में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया था, जिसका असर अब शहर की सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर दिखाई देने लगा है। उन्होंने कहा कि कई वार्डों में साफ-सफाई की स्थिति पहले से बेहतर हुई है, लेकिन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अभी और प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने जानकारी दी कि स्वच्छता अभियान को प्रभावी बनाने के लिए करीब एक दर्जन एचसीएस अधिकारियों को अलग-अलग वार्डों का प्रभारी बनाया गया है। ये अधिकारी प्रतिदिन अपने-अपने क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था की निगरानी करते हैं और कमियों को तुरंत ठीक करवाते हैं। उन्होंने जनभागीदारी को स्वच्छता अभियान की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी बताते हुए नागरिकों से भी सहयोग की अपील की।

रोहतक। स्वच्छता व्यवस्था का औचक निरीक्षण करते उपायुक्त सचिन गुप्ता।

अभियान को जनांदोलन बनाने पर जोर

डीसी ने कहा कि स्वच्छता केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनांदोलन होना चाहिए। जब तक नागरिक स्वयं आगे नहीं आएंगे, तब तक स्वच्छता का लक्ष्य पूरी तरह हासिल नहीं हो सकता। उन्होंने निगम अधिकारियों को स्वच्छता प्रबंधन में तेजी लाने और जनजागरूकता अभियान को और मजबूत करने के निर्देश दिए।

नगर निगम ने जारी किया नया टेंडर

निरीक्षण के दौरान डीसी ने बताया कि नगर निगम द्वारा सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए नया टेंडर जारी किया गया है। इसके तहत नई गाड़ियों को कचरा उठाने के काम में लगाया गया है, ताकि घर-घर से कचरा वैज्ञानिक तरीके से एकत्रित कर निपटान किया जा सके। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि कचरा नगर निगम की गाड़ियों में ही डालें और सड़क पर कचरा फेंकने की आदत को खत्म करें। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि कचरा सड़कों पर फेंकने से जहां शहर की सुंदरता बिगड़ती है, वहीं रोग और प्रदूषण भी बढ़ते हैं।

जरूरत पड़ने पर बदला जाएगा कलेक्शन समय

डीसी सचिन गुप्ता ने कहा कि कचरा जलाना पूरी तरह प्रतिबंधित है, क्योंकि इससे वायु प्रदूषण बढ़ता है और स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने बताया कि नागरिकों की आवश्यकता के अनुसार कचरा उठाने वाली गाड़ियों का समय भी बदला जा सकता है, ताकि किसी को असुविधा न हो। उन्होंने नागरिकों से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि यदि शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाना है, तो हर व्यक्ति को जिम्मेदारी निभानी होगी।

कई प्रमुख स्थानों का किया निरीक्षण

निरीक्षण दौर में डीसी सचिन गुप्ता ने अंबेडकर चौक, सोनीपत स्टैंड, मानसरोवर पार्क, मॉडल टाउन, राजीव गांधी चौक, सर्किट हाउस रोड, रुपया चौक, झज्जर रोड, झज्जर चुंगी और सरकुलर रोड समेत शहर के कई प्रमुख क्षेत्रों का दौरा किया। इन स्थानों पर उन्होंने सफाई व्यवस्था की समीक्षा की और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने केंद्रीय विद्यालय का भी निरीक्षण कर स्कूल परिसर में स्वच्छता और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। अभियान के तहत दुकानदारों से सहयोग की अपील की और कहा कि अतिक्रमण शहर की सुंदरता और सुगमता में बाधक है।

वीबी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत रैली का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

जिला समाज कल्याण कार्यालय के निर्देशानुसार वीबी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत जागरूकता रैली निकाली गई। रैली का शुभारंभ कॉलेज के अध्यक्ष सुदर्शन मलिक और डायरेक्टर संतोष मलिक ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर बीएड के छात्राध्यापकों ने नशे के दुष्परिणामों को प्रदर्शित करने वाले पोस्टर और चित्रों के माध्यम से लोगों को नशे से दूर रहने का संदेश दिया। रैली के दौरान छात्राध्यापकों ने समाज को नशे से होने वाले शारीरिक, मानसिक और सामाजिक नुकसान के बारे में जागरूक करते हुए स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की अपील की। उन्होंने रास्ते में स्लोगन और संदेशों के माध्यम से युवाओं को नशे से बचने और दूसरों को भी रोकने के लिए प्रेरित किया।

श्री लाल नाथ हिंदू कॉलेज के छात्रों ने किया वीटा प्लांट का भ्रमण

रोहतक। श्री लाल नाथ हिंदू महाविद्यालय द्वारा एक दिवसीय औद्योगिक भ्रमण का आयोजन किया गया। इस भ्रमण में बीसीए प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के साथ वीटा प्लांट का भ्रमण किया। इस अवसर पर बीसीए विभाग की विभागध्यक्षा डॉ. पूजा चावला ने बताया कि भ्रमण का नेतृत्व महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार तनेजा जी के कुशल निर्देशन में सम्पन्न किया गया। इस औद्योगिक यात्रा का उद्देश्य विद्यार्थियों को उद्योग में उपयोग होने वाली तकनीकों, उत्पादन प्रकिया तथा कंप्यूटर सिस्टम से परिचित कराना था। प्लांट के आईटी विभाग के अधिकारियों ने विद्यार्थियों को बताया कि कैसे आधुनिक तकनीक,सॉफ्टवेर सिस्टम, डेटा मैनेजमेंट और ऑटोमेशन का उपयोग उत्पादन को अधिक सुरक्षित और प्रभावी बनाता है। इस भ्रमण का संचालन डॉ. रीना कत्याल व कीर्ति ढींगरा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मधु विज, प्रीति यादव, प्रीति व अंकिता व डॉ. सुमित उपस्थित रहे।

बिहार विस चुनाव जीत की खुशी में भाजपा नेता ने बंटवाई खीर

महम। भाजपा कार्यकर्ताओं को मखाना खीर बांटते राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महम

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की प्रचंड जीत की खुशी में महम में भाजपा नेता महंत सतीश दास ने मखाना खीर बंटवाई। महंत सतीश दास मखाना खीर लेकर राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा के आवास पर पहुंचे। इस दौरान सांसद रामचंद्र जांगड़ा और महंत सतीश दास ने अपने हाथों से मखाना खीर परोसकर पार्टी कार्यकर्ताओं को खिलाई। राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने कहा कि पहले बिहार में जंगल राज फिर से शुरू न हो जाए, इसलिए वहां की जनता ने फिर से एनडीए की सरकार को वोट दिया है। बिहार की जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों से खुश होकर मतदान किया है। जांगड़ा ने कहा कि अब जब भी जहां पर भी वोटिंग होगी, वहीं पर भाजपा और एनडीए गठबंधन की जीत होगी।

पुराने बस अड्डे पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने बांटे लड्डू

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत पर बीजेपी कार्यकर्ताओं ने महम के पुराने बस स्टैंड पर लड्डू बांटकर खुशी का इजहार किया। भाजपा नेता अजीत सिंह अहलावत ने कहा कि विपक्ष का सुपड़ा साफ हो गया है। बिहार की जनता ने एनडीए और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों को स्वीकार किया है। आने वाले 50 साल तक केंद्र और हरियाणा प्रदेश में बीजेपी अपनी सरकार बनाएगी। नरेंद्र मोदी पूरी दुनिया के ताकवर नेता हैं। पूरी दुनिया उनकी बात मानती है। वे दुनिया एक लोकप्रिय नेता हैं। बिहार की जनता ने नरेंद्र मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं को स्वीकार किया है। इस मौके पर अशोक गुप्ता, जसमेर सिंह, प्रवीन, पवन शर्मा, जयभगवान दहिया, प्रदीप, कृष्ण, बलदेव, सपताल, मुकेश समेत कई पार्टी कार्यकर्ता मौजूद थे।

आईबी स्कूल में स्पोर्ट्स कार्निवल आज से 18 नवंबर तक होगा

तैयारियां पूरी, बच्चे उत्साह से कर रहे अभ्यास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

आईबी स्कूल में 16 से 18 नवंबर तक आयोजित होने जा रहे स्पोर्ट्स कार्निवल की तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। पूरे स्कूल परिसर में उत्साह, ऊर्जा और खेल भावना का अनोखा मिश्रण देखने को मिल रहा है। बच्चे आगामी खेल मुकाबलों की तैयारी में जुटे हुए हैं और वुडलैंड एरीना में रोजाना अभ्यास सत्र जोर-शोर से चल रहे हैं।

उपायुक्त होंगे मुख्य अतिथि

स्पोर्ट्स कार्निवल का शुभारंभ भव्य उद्घाटन समारोह के साथ होगा, जिसमें रोहतक के जिला उपायुक्त सचिन गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। इसके अलावा कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी मंजीत मलिक खंड शिक्षा अधिकारी जय भगवान, श्याम शर्मा उपस्थित रहेंगे और विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाएंगे।

स्कूल परिवार उत्सुकता से कर रहा इंतजार

आईबी स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. मनोज कुमार सिंह ने बताया कि यह आयोजन न केवल विद्यार्थियों के लिए एक बड़ा मंच साबित होगा, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम भी है। उन्होंने यह भी कहा कि स्कूल परिवार विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखने के लिए उत्सुक है।

समर्थगुरु सिद्धार्थ ने दिया कैडेट बनने का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

समर्थगुरु सिद्धार्थ औलिया 72वें स्थापना दिवस के अवसर पर अपने सैकड़ों साधकों के साथ नेतरहाट आवासीय विद्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने बतौर अति विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम में शामिल होकर विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया।

समर्थगुरु ने विद्यालय में बिताए अपने बचपन के संस्मरण साझा किए, जिन्हें सुनकर वातावरण भावुकता और प्रेरणा से भर गया। उनके साथ रोहतक और सोनीपत के कई साधक मौजूद रहे। संदेश देते हुए समर्थगुरु सिद्धार्थ ने विद्यार्थियों को “कैडेट” बनने का मूल मंत्र समझाया। उन्होंने कैडेट शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि एक विद्यार्थी में होने का गुण, का स्वभाव, जीवन जीने की भावना और दृष्टिकोण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यही चार आधार एक सच्चे कैडेट के व्यक्तित्व को गढ़ते हैं और विद्यार्थी जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं। कार्यक्रम के दौरान समर्थगुरु ने सभागार में उपस्थित सभी लोगों को व्यावहारिक रूप से ध्यान में उतरने की सरल और सहज विधि का अभ्यास भी करवाया, जिसे सभी ने गहरे अनुभव के साथ अपनाया। उन्होंने विद्यालय में ओशोधारा के प्रथम तल का ‘ध्यान योग’ कार्यक्रम आयोजित करने का भी प्रस्ताव रखा, जिसे विद्यालय प्रशासन ने सहर्ष स्वीकार किया। इससे पहले समर्थगुरु सिद्धार्थ ने परेड ग्राउंड में विद्यार्थियों की परेड का निरीक्षण किया और योगा व पीटी डिस्प्ले की सराहना की।

ये रहे मौजूद

सिद्धार्थ विद्यार्थियों की अनुशासनप्रियता और प्रदर्शन को उत्कृष्ट बताया। इस अवसर पर उनके परिवार के साथ केंद्रीय कोऑर्डिनेटर आचार्य दर्शन, जम्मू–कश्मीर कोऑर्डिनेटर स्वामी विजय शर्मा, नेपाल कोऑर्डिनेटर मां मंजू, हरियाणा से अनिल सरोहा, सोहम, नितिन, प्रियंका, विदुषी, अरुणिमा तथा प्रेस मीडिया कोऑर्डिनेटर संदीप नैन सहित अनेक साधक उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

निजी चार पहिया वाहनों में प्रतिवर्ष औसत वृद्धि दर 17.35 तथा दुपहिया में 11.75 प्रतिशत

सार्वजनिक परिवहन का नहीं कोई खेवनहार, प्राइवेट व्हीकल से बढ़ रहा प्रदूषण

अमरजीत एस गिल ▶▶ रोहतक

केंद्रीय आवास और शहरी कार्य मंत्रालय के अगस्त 2023 दिशा-निर्देशों के अनुसार किसी भी राज्य में प्रति 1 लाख आबादी पर कम से कम 50 बसें होनी चाहिए। हरियाणा की 2025 की अनुमानित आबादी इस समय लगभग 3.15 करोड़ है, जिसके हिसाब से राज्य में कम से कम 15,750 बसों की आवश्यकता है। लेकिन हैं 4000-5000। ऐसे में निजी वाहनों की रफ्तार तेजी से बढ़ रही है। जैसे-जैसे व्हीकल की संख्या बढ़ रही है, ऐसे ही प्रदूषण में भी इजाफा हो रहा है। हरियाणा सरकार दावा कर रही है कि पराली जलाने की घटनाओं में 37 प्रतिशत की कमी इस बार हुई है। बावजूद इसके रोहतक के पॉल्यूशन में 41 फीसदी की बढ़ोतरी एक से नौ नवंबर के बीच हुई। वृद्धि क्यों हो हुई, इसका जवाब सरकार के पास है नहीं। नवंबर के बीते 14 दिनों में शहर के लोगों को एक दिन भी सांस लेने को स्वच्छ तो दूर की कौड़ी है मध्यम श्रेणी की भी उपलब्ध नहीं हुई।

सरकार नहीं करती प्रयास

एनवायरोकैटलिस्टस नई दिल्ली के कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. अरूण कुमार बताते हैं कि हरियाणा के अधिकांश शहर इन दिनों बेहद खराब वायु गुणवत्ता का सामना कर रहे हैं। वाहनों से होने वाला प्रदूषण इसका प्रमुख कारण है। प्रदूषण को कम करने के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त उपायों में सार्वजनिक परिवहन विशेषकर बसों की संख्या बढ़ाना और निजी वाहनों के पंजीकरण में कमी लाना शामिल है। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं किया जा रहा है। बल्कि इसके उल्टा किया जा रहा है। लगातार सार्वजनिक वाहन प्रणाली सरकारों द्वारा ध्वस्त की जा रही है। ऐसा करने पर निजी वाहनों की संख्या में बढ़ोतरी होगी, इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए।

व्हीकल संख्या 1.3 से 2.8 लाख हुई

डॉ. कुमार आंकड़ा का हवाला देते हुए कहते हैं कि पिछले 10 वर्षों में हरियाणा ने कुल 26,502 बसें खरीदी हैं। एक बस की औसत आयु लगभग 6 से 7 वर्ष मानी जाती है। इनमें से कई बसें अंतरराज्यीय, स्कूल एवं अन्य सेवाओं में चलती हैं, जिससे शहरी सार्वजनिक परिवहन की उपलब्धता और विश्वसनीयता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निजी वाहनों की संख्या लगातार बढ़ रही है। चार पहिया वाहनों में औसत वृद्धि दर 17.35% तथा दुपहिया वाहनों में 11.75% दर्ज की गई है। दोपहिया वाहनों की बिक्री साल 2015–16 से 2018–19 तक लगातार बढ़ी और लगभग 5.8 लाख वाहनों के उच्चतम स्तर पर पहुंची। पर्यायवरण विशेषज्ञ डॉ. अरूण कुमार के मुताबिक साल 2020–21 के आसपास बिक्री में तेजी से गिरावट आई, जो सभंवतः कोविड महामारी के कारण थी। लेकिन 2021–22 से बिक्री में फिर से तेजी आ गई। वर्ष 2024–25 तक दोपहिया वाहनों की बिक्री लगभग 5.5 लाख तक पहुंच गई। इसी प्रकार चार पहिया वाहनों की बिक्री भी धीरे-धीरे बढ़ी। वित्तीय वर्ष 2015–16 में लगभग 1.3 लाख हरियाणा के अंदर विभिन्न कंपनियों ने बेचे। चालू वित्तीय वर्ष में गत सितंबर तक ये संख्या 2.8 लाख तक पहुंच गई।

434 तक पहुंच चुका है एक्यूआई

डॉ. कुमार ने कहा कि प्रदूषण को लेकर हमारी सरकारें बिल्कुल भी चिंतित नहीं हैं। हरियाणा में सार्वजनिक परिवहन की कम उपलब्धता और निजी वाहनों की तेज़ वृद्धि मिलकर वायु प्रदूषण को और भी गंभीर बना रही है, जिससे आम लोगों का स्वास्थ्य निरंतर खतरे में है। पॉल्यूशन कितना भयावह रूप धारण करता जा रहा है, इसका प्रमाण यह है कि वीरवार 13 नवंबर शाम के छह बजे रोहतक का एक्यूआई 434 था, जो इस मौसम में अब तक का सर्वाधिक स्तर है और पर्यावरण विशेषज्ञों के लिए गंभीर चेतावनी भी है। डॉ. अरुण ने बताया कि नवंबर के 14 दिन बीत चुके हैं, लेकिन रोहतक शहर में एक भी दिन ऐसा नहीं बीता, जब लोगों को सांस लेने के लिए मध्यम दर्जे की हवा भी मिल पाई हो। एक्यूआई एक नवंबर को 380, दो और तीन को उपलब्ध नहीं, 4 को 329, 5 को 244, 6 को 348, 7 को उपलब्ध नहीं, 8 को 374, 9 को 323, 10 को 324, 11 को 342, 12 को 406, 13 को 434 और 14 नवंबर को रात आठ बजे एक्यूआई 307 था। इससे पहले 30 अक्टूबर को 426 दर्ज किया गया था, जो लगातार बिगड़ती वायु स्थिति को स्पष्ट दर्शाता है।

प्रदूषण के लिए वाहन जिम्मेदार

वाहनों का धुआं वायु प्रदूषण के लिए बहुत हद तक जिम्मेदार है, इसका सटीक प्रतिशत क्षेत्र और संदर्भ के अनुसार अलग-अलग होता है। एक अनुमान के अनुसार, कुल वायु प्रदूषण के 80 प्रतिशत से अधिक के लिए वाहन मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। वाहनों के धुएं से कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और दूसरे खतरनाक कण पदार्थ निकलते हैं। ये सांस से संबंधित बीमारियां, हृदय रोग और कैंसर जैसे घातक रोग को जन्म देते हैं।

विशेषः अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 19 नवंबर

दबावों-अपेक्षाओं-चुनौतियों से विवश दुनिया भर के पुरुष

पुरुषों को परिवार का पालक, कमाने वाला और हर दबाव सहन कर लेने वाला लौह मनुष्य समझा जाता है। सदियों से चली आ रही यह मान्यता आज भी बरकरार है। इस वजह से वे अनेक तरह की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करने को विवश हैं। ऐसे में जरूरत है कि न केवल समाज बल्कि स्वयं पुरुष भी इन दबावों से मुक्त होने का प्रयास करें।

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

अनुमान के मुताबिक दुनिया में लगभग 4.14 अरब पुरुषों की आबादी है, जो विश्व आबादी की लगभग 50.27 फीसदी है। दुनिया के हर समाज में चाहे वो अफ्रीकन कबीलाई समाज हो, चाहे यूरोप का आधुनिक समाज हो, चाहे भारत और चीन जैसे पारंपरिक सभ्यताओं वाला समाज हो या अमेरिका का अत्याधुनिक बाजारू वर्चस्व वाला समाज हो। सभी समाजों में पुरुषों की मजबूती का मिथ सदियों से व्याप्त है। इस कारण आज के इस डिजिटल और एआई के युग में भी पुरुष वर्ग अनेक मानसिक, शारीरिक और आर्थिक परेशानियों के दुष्चक्र में फंसा हुआ है। दरअसल, दुनिया के हर समाज में चाहे पूरब हो या पश्चिम, पुरुषों को लेकर यह मिथ बहुत गहरे तक मौजूद है कि वे मजबूती, भावनात्मक निरपेक्षता के धनी होते हैं यानी पुरुष होने का मतलब हमेशा कठिन परिस्थितियों में भी भावनाओं पर पूरा नियंत्रण रखने वाला होता है। सच्चाई यह है कि इस मान्यता की वजह से पुरुष अनेक दबावों और परेशानियों के साथ जीने के लिए मजबूर होते जा रहे हैं।

बढ़ रही स्वास्थ्य समस्याएं

पुरुष हर हाल में मजबूत बने रहते हैं, कभी भावनाओं में नहीं बहते। इस मिथ पर खरे उतरने के लिए दुनिया के 70 फीसदी से ज्यादा पुरुष अपनी समस्याएं, खासकर शारीरिक समस्याएं किसी और को बताते ही नहीं हैं। इस वजह से उनमें शारीरिक समस्याएं बढ़ती हैं। दुनिया भर के स्वास्थ्य आंकड़े बताते हैं कि अपने स्वास्थ्य के चेकअप को लेकर पुरुष बेहद लापरवाह होते हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा हार्ट अटैक पुरुषों को होता है और माना जाता है कि करीब 50 फीसदी पुरुषों को पहले से पता होता है कि वो इसकी चपेट में हैं, लेकिन इसका जिक्र कभी नहीं करते। वास्तव में इन मिथों ने पुरुषों की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को आज तक के इतिहास में सबसे खतरनाक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। आज भी ज्यादातर पुरुष स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण चेकअप कराने से कन्नी काट जाते हैं। यही कारण है कि पुरुषों की ज्यादातर गंभीर बीमारियां समय रहते पकड़ में नहीं आतीं और यह आंकड़ा तो दुनिया में हर कोई जानता है कि हर देश में पुरुष महिलाओं के मुकाबले कम से कम 7-8 साल कम जीते हैं।

नहीं करते भावनाएं अभिव्यक्त

हैरानी की बात यह है कि इस डिजिटल और एआई के युग में भी पुरुषों से वैसी ही भावनात्मक उम्मीदें की जाती हैं, जैसे मध्ययुग में की जाती थीं कि वे अपनी परेशानियों का रोना नहीं रोएंगे। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनिया के करीब 60 फीसदी से ज्यादा पुरुष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध विच्छेद का दंश झेलते हैं। क्योंकि वे अपनी भावनाओं और निर्भरताओं का सामाजिक रूप से प्रदर्शन नहीं कर पाते। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में फंस जाने के बाद न केवल वे अपने दोस्त खो देते हैं बल्कि पारिवारिक अलगाव की सजा भी पुरुषों को ही मिलती है।

नहीं दिखना चाहते इमोशनली वीक

आज जब एआई, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भरमार है, तब भी यह देखना चिंताजनक है कि ज्यादातर पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अकसर छिपे रहते हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया के अधिकांश देशों में पुरुषों द्वारा किए गए आत्महत्या के प्रयास, महिलाओं की तुलना में बहुत ज्यादा होते हैं। मगर हैरानी की बात यह है कि करीब 40 फीसदी आत्महत्या करने वाले या आत्महत्या की कोशिश करने वाले पुरुष इस बात का बिना खुलासा किए यह कदम उठा लेते हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? दरअसल, पुरुषों की यह समस्या है कि वे अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पाते, प्राचीन काल से आज तक यह स्थिति जैसे की तैसे ही बनी हुई हैं। आज भी पुरुषों को उसी नजरिए से देखा जाता है, उनसे वही अपेक्षा की जाती है। विडंबना यह है कि हर पुरुष खुद को भी उसी मिथक की नजर से देखता है। इसीलिए दुनिया का हर पुरुष भावनात्मक रूप से कमजोर होने के बाद भी इस बात से डरता है कि उसे दूसरा कोई कमजोर न समझे।

कम नहीं वर्क-इकोनॉमिकल प्रेशर

इस डिजिटल युग में समस्या सिर्फ भावनात्मक नहीं है। इस दौर की एक बड़ी समस्या यह भी है कि काम-काज की डिजिटल संस्कृति ने पुरुषों का लाइफ बैलेंस बिल्कुल बिगाड़कर रख दिया है। पिछली एक सदी से बराबरी के नारों के बीच भी दुनिया के हर समाज में आज भी पुरुषों से उम्मीद यही की जाती है कि घर में कमाने की जिम्मेदारी उन्हीं की है। सोशल मीडिया द्वारा भले पुरुषों की अनेक काल्पनिक छवियां प्रस्तुत की जाती हों, लेकिन विश्व के श्रम पर नजर रखने वाले संगठन बताते हैं कि अभी भी जीडीपी ओरिएंटेड तकरीबन 70 फीसदी काम दुनिया के पुरुष ही करते हैं और आज जबकि ज्यादातर मामलों में मशीन पुरुषों से बेहतर है, अब भी पुरुष इस दबाव में जीते हैं कि मैं अच्छा काम कर रहा हूं या नहीं। कहीं मैं दूसरे से पीछे तो नहीं रह जाऊंगा। इस वजह से वे ओवर वर्कप्रेशर में रहते हैं।

समाज-स्वयं पुरुष बदलें नजरिया

विश्व पुरुष दिवस के अवसर पर जरूरत है कि पुरुषों की स्वास्थ्य जागरूकता और विशेषकर उनके मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति पर खुलकर बोलने और स्वीकार करने का माहौल बने। पुरुषों को बदलती तकनीकी और सामाजिक जीवन में नई वास्तविकताओं को स्वीकार करना चाहिए। इस बात की भी जरूरत है कि पुरुषों को ज्यादा से ज्यादा संवाद मंच और मानसिक स्वास्थ्य चेकअप प्लेटफॉर्म पर लाया जाए। उन्हें परिवार का साथ और संबल मिले। पुरुष स्वयं को आयरन मैन न समझें। अपने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। तभी वे स्वस्थ-खुशहाल जीवन जी पाएंगे। *

भारतीय पुरुषों की चुनौतियां

इस एआई और ग्लोबलाइजेशन के दौर में भारत में पुरुषों की औसत जीवन प्रत्याशा महिलाओं के मुकाबले करीब 08 साल कम है। सिर्फ उम्र के मामले में ही नहीं, पैदा होने के बाद सर्वाइव करने के मामले में भी पुरुष महिलाओं से पीछे हैं तथा हर साल बीमारियों से मरने वाले में पुरुषों और महिलाओं में 12 से 14 फीसदी का फर्क है। 2021 के रिपोर्ट में दर्ज नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ऑफ इंडिया के आंकड़ों के मुताबिक देश में 72.5 फीसदी आत्महत्याएं पुरुषों द्वारा की जाती हैं। 40 फीसदी पुरुष इस दौर में भी अपनी मानसिक स्वास्थ्य की समस्या को परिवार से छिपाते हैं और 2017 के एक आंकड़े के मुताबिक अलग-अलग रेंडम स्वास्थ्य पड़ताल में पाया गया था कि करीब 1.97 करोड़ पुरुष किसी न किसी तरह की मानसिक समस्या से ग्रस्त थे।
सवाल है आखिर इस खुलेपन के दौर में भी पुरुष खुद को लेकर इस तरह के बंद के शिकार क्यों हैं? तो विशेषज्ञों के मुताबिक भारत में पुरुषों पर आज भी वो पारंपरिक अपेक्षाएं बनी हुई हैं जो कृषि युग से उन पर रही हैं। मसलन आज भी पुरुष को परिवार का पालक, कमाने वाला और दबाव सहन कर लेने वाला लौह पुरुष समझा जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस डिजिटल मीडिया और प्रतिस्पर्धा के युग में पुरुष उपेक्षा का शिकार हो गए हैं और इस दौर में उनकी मानसिक असुरक्षा का सबसे बड़ा कारण रोजगार पर लटकती एआई की तलवार है।

नई सदी के पहले दशक यानी 2010 के बाद जन्मी पीढ़ी (जनरेशन अल्फा), बेशुमार तकनीकी सुविधाओं, कई चुनौतियों और अनेक दुविधाओं के साथ बड़ी हो रही है। ऐसे में उनका सहज, सही दिशा में विकास हो इसके लिए उन्हें थामने, संभालने और संबल देने की भी जरूरत है।

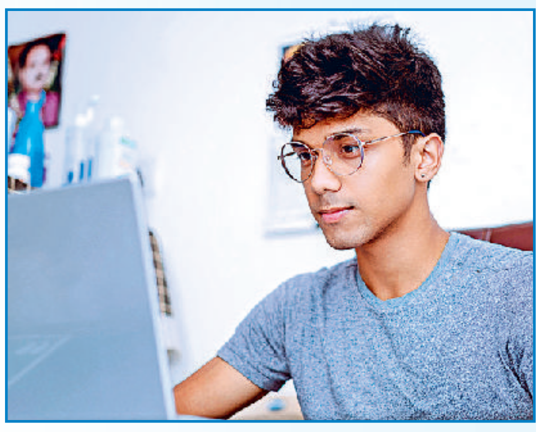

जनरेशन अल्फा मन-जीवन को थामने-संबल देने की दरकार

लाइफस्टाइल
डॉ. मोनिका शर्मा

समय बदलने के साथ पीढ़ियां बदलती हैं और पीढ़ियों के साथ जमाने के रंग भी बदल जाते हैं। हर नई जनरेशन, पुरानी जनरेशन की तुलना में नए रंग-ढंग को जीती ही है। समय के साथ बच्चों की जीवनशैली से जुड़ा हर बदलाव सहज स्वीकार्य नहीं होता। इसे समझना और एक संतुलन साधना जरूरी है। हाल के वर्षों में अल्फा जनरेशन की जीवनशैली से जुड़े बदलाव बेहद विचारणीय हो चले हैं। तकनीक की दस्तक ने परिवर्तन की गति ना सिर्फ कई गुना बढ़ा दी है बल्कि बहुत से नए पहलू भी जोड़ दिए है। ऐसे में जनरेशन अल्फा को संभालने के लिए पैरेंट्स को सजग रहने की जरूरत है।

क्या है जनरेशन अल्फाः वर्ष 2010 से 2024 के बीच जन्मी पीढ़ी को जनरेशन अल्फा कहा जाता है। डिजिटल संसार में आंखें खोलने वाली यह पीढ़ी जनरेशन जेड की अगली पीढ़ी है। गौरतलब है कि 1997 से 2012 के बीच जन्मे लोगों को जनरेशन जेड कहा जाता है। अल्फा पीढ़ी, ग्लोबल माइंडेड और आजाद खयाल है। साथ ही जेन अल्फा की सीखने-समझने की क्षमता और अंदाज दोनों ही अलग हैं। इस पीढ़ी को जन्म के समय से ही तकनीक ने घेरा हुआ है। डिजिटल दुनिया में कुशल नेविगेटर कही जाने वाली यह पीढ़ी, जागरूक और इनोवेटिव विचारों की धनी भी है। अपने अधिकारों को लेकर सजग है। अच्छी एडॉप्टिबिलिटी रखती है।

तकनीक का सही इस्तेमाल जरूरीः जनरेशन अल्फा को एक डिजिटल नेटिव माना जाता है। जन्म से ही कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन, टैबलेट, इंटरनेट और दूसरे डिजिटल डिवाइसेस इनके जीवन का हिस्सा रहे हैं। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में बड़ी हो रही अल्फा जनरेशन के मन और जीवन को थामने के लिए टेक्निकल गैजेट्स के सीधे इस्तेमाल की सीख देना आवश्यक है। लंबा समय स्क्रीन के सामने बिता रही अल्फा जनरेशन को डील करने के लिए पैरेंट्स इन्हें सामाजिक जीवन से जोड़ें। डिजिटल दुनिया में रील्स, पोस्ट्स, मीम्स देखते रहने वाली अल्फा पीढ़ी को अपने असली रिश्तों-नातों से मिलवाएं। पर्व-त्योहारों पर परंपरागत जीवन का पाठ पढ़ाएं। तकनीक को सहूलियत के बजाय लत न बनने दें। क्लिक भर में हर काम हो जाने के आदी न होने दें। खुद अपने काम करने दें। चिंतनीय है कि तकनीकी जाल में उलझे ये बच्चे, कई मोर्चों पर दिशाहीनता का शिकार भी हो जाते हैं। यही वजह है कि इस हाइटेक पीढ़ी को डील करने के लिए कुछ मामलों में असीम धैर्य की भी दरकार है, तो कई बातों को लेकर स्पष्ट गाइडलाइंस बनाना भी जरूरी हैं। बड़ों का साथ और स्नेह, जेन अल्फा को भी सहज जीवन से जोड़े रखेगा।

नियमित संवाद जरूरीः चैट-जीपीटी से सलाह लेने वाली इस जनरेशन से हर समस्या को लेकर नियमित संवाद किया जाना चाहिए। साथ ही इन बच्चों को सेल्फ कंट्रोल सिखाना भी बहुत जरूरी है। अनुशासित जीवनशैली न केवल स्मार्ट स्क्रीन से दूर रखेगी बल्कि जीवन को वास्तविक धरातल पर जीना भी सिखाएगी। इन बच्चों को स्मार्ट गैजेट्स के इस्तेमाल से पूरी तरह दूर नहीं रखा जा सकता। मानसिक रूप से मजबूत और सजग पीढ़ी पर किसी भी तरह का दबाव डालने के बजाय हर मामले में कोई बेहतर ऑप्शन सुझाएं। रचनात्मक सोच को बढ़ावा दें। इंडोर गेम्स हों या दूसरी फिजिकल एक्टिविटीज, पैरेंट्स इस टेक सेवी पीढ़ी को सार्थक व्यस्तता का माहौल दें।

भावनात्मक मोर्चे पर डटेंः बात चाहे असल और आभासी व्यक्तित्व का फर्क समझाने की हो या सामाजिक-पारिवारिक जीवन से जोड़ने की, पैरेंट्स अल्फा पीढ़ी को इमोशनल फ्रंट पर अवश्य थामें। एडिटेड फोटोज, फॉलोअर्स और वर्चुअल स्टारडम की आभासी दुनिया में खोए बच्चों का मन समझने का प्रयास करना जरूरी है। सोशल लाइफ से लगभग दूर हो चुकी अल्फा पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक मेल-जोल के मामले में कई चुनौतियों से जूझ रही है। गुस्सा, चिड़चिड़ापन और याददाश्त कम होने जैसी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। ऐसे में इन बच्चों को स्क्रीन स्क्रॉलिंग के बजाय साथ बैठकर बात करने का महत्व समझाएं। वर्चुअल संसार में गुम होकर अकेलेपन और अवसाद के घेरे में आने से बचाने के लिए सॉफ्ट स्किल्स सिखाने पर फोकस करें। व्यावहारिक मोर्चे पर स्क्रीन स्क्रॉलिंग ने इन्हें जरूरत और इच्छा का अंतर समझने का माहौल ही नहीं दिया। अभिभावक इनकी मनचाही चीजें उपलब्ध करवाने और हर मांग पूरी करने से भी बचें। इस पीढ़ी के बच्चों के पास हर तरह की सूचनाएं और जानकारियां भी पहुंच रही हैं। ऐसे में अभिभावक उनके सवालों पर ध्यान दें। डांटने-डपटने और चुप रहने की हिदायत देने के बजाय मन से बच्चों के विचार सुनकर ही उनको सपोर्ट किया जा सकता है। पैरेंट्स तकनीक से भरपूर वातावरण में परवरिश पाती अल्फा जनरेशन में, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जुड़ाव का भाव जगाएं। मशीनों के बीच पलती इस पीढ़ी के मन की संवेदनाओं को बचाना, आज पैरेंट्स की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। *

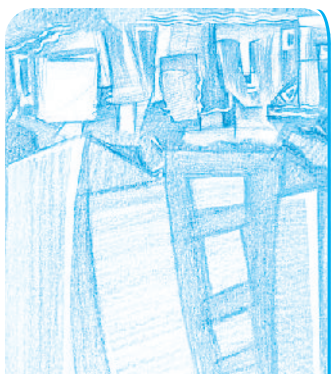

गजल
अब्दुल कलाम

यहां कोई किसी का अब न होगा
किसी को जब तलक मतलब न होगा

तरस जाएंगी साहिल के लिए फिर
नाखुदा कश्तियों का जब न होगा

सुलझती जाएगी जब खुद ही उलझन
किसी का जब कोई मजहब न होगा

कौन होगा नामलेवा फिर अदब का
जब सलीके का कोई मकतब न होगा

दे सका न जां वतन की राह में जो
उसके जीने का कोई सबब न होगा

कर सका न जो किनारा तू अना से
साथ तेरे फिर तेरा ही रब न होगा

व्यंग्य
डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

रौब जमाती मूंछें!

अभी एक रोज सुबह-सुबह पार्क में टहलते समय मित्रों के संग मूंछों पर बहस चली तो हर कोई अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए मूंछों के पुराण पर चर्चा करने लगा। वकील साहब मथुरा जी अपनी सीनियर सिटीजन वाली करीने से कटी सफेद मूंछों पर हाथ फेरते हुए बोले, 'मैंने जब से मूंछों को बढ़ाया फिर रख-रखाव बेहतर तरीके से करने लगा, तो हर कोई मेरी मूंछों को देखकर मूंछों के बारे में चर्चा करने लगा। हर कोई कहने लगा है कि अब हमें मूंछें हों तो नत्थूलाल जैसी की जगह मूंछें हों तो मथुरा लाल वकील साहब जैसी कहना पड़ेगा। इस पर मैं फूला नहीं समाता और मूंछों पर हाथ फेरते हुए मूंछों को और सम्मान देने लगा हूं।' कुछ पल गर्वीली मुस्कान बिखेरने के बाद वह पुनः बोले, 'जब से मैंने मूंछें बढ़ाईं, उनको सहेजा तो बहस के मुद्दों के दौरान उस पर हाथ फेरते रहने से कई क्लाइंट के मुकदमे जीत लिए। कोर्ट में हर कोई मुझको देखने के पहले मेरी मूंछें देखता। जब-जब नए क्लाइंट आते तो कहते मेरे वकील साहब तो मूंछों वाले हैं! जिनको देखकर ही सामने वालों के मुकदमे की मूंछें नीची हो जाती हैं।'

इस पर सुनील भैया बोले, 'हमारे गांव में भी जब भी मान-सम्मान की बात होती है, लोग कहते हैं मूंछ का सवाल है। फिल्म में तो मूंछें हों तो नत्थूलाल जैसी बात प्रचलन में आई। लेकिन हर गांव में मूंछों पर ताव देने वाले मिलते हैं। गांव के एक बुजुर्ग तो मूंछों पर ताव देने के कारण ताऊजी कहलाने लगे हैं।'

इस पर बात-बात में मूंछों पर ताव देने वाले रमन सिंह बोले, 'अरे मूंछें आन-बान और शान होती हैं। मूंछें कोई भी रख ले, लेकिन उन्हें मेंटेन करना आसान नहीं होता है। मूंछें भी फर्क और फख्र वाली होती हैं। अमीर सरमाएदार की मूंछें मर्दानगी, स्वाभिमान, वीरता, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान और अधिकार को प्रकट करने वाली मानी जाती हैं। इसीलिए छोटे, गरीब आदमी पहले तो मूंछें रख ही नहीं सकता और यदि कोई रखता भी है तो इसलिए कि वक्त जरूरत पड़ने पर मूंछें नीचे करके जान की अमान पा जाए।'

इस पर रामनिवास जी बोले, 'आपको पता नहीं जब कोई अपना रौब अपनी वाणी, कार्यशाली से नहीं जमा पाता है तो उसकी मूंछें रौब जमा देती हैं। अरे, अच्छे से अच्छा पहलवान क्यों ना हो, अखाड़े में उतरने से पहले मूंछ पर ताव जरूर देता है, फिर दांव खेलता है। मूंछें व्यक्ति की बॉडी लैंग्वेज भी होती हैं। ताव देने वाली मूंछें, डाई के जरिए सफेद से काली की गई मूंछें, खड़ी-आड़ी मूंछें, लंबी मूंछें, लकीरों वाली मूंछें, होंठों के ऊपर जेलर टाइप आदि-आदि तरह की मूंछों से व्यक्ति की पर्सनालिटी का पता चलता है।' इस पर ज्ञान बघारने कमल जी बोले, 'मूंछों को सहलाने से, हाथ फेरने से दिमाग में तरह-तरह की नई सोच और आइडिया आते हैं। मूंछें समस्या को हल भी करती हैं तो कई स्थान पर प्रॉब्लम भी क्रिएट करती हैं। मूंछें व्यक्ति की पहचान होती हैं। मूंछों की प्रकृति आकार के आधार पर लोगों को जाना जाता है। कुछ मूंछमुंडे भी होते हैं, जिन्हें अपनी पहचान किसी अन्य तरीके से बनानी पड़ती है और इसके लिए काफी जतन करने पड़ते हैं।' जब मूंछों पर इतनी बहस चल रही थी तो प्रोफेसर साहब बोले, 'मूंछों का आकार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाता है तो कई बार मूंछों पर ताव देना भारी भी पड़ जाता है और मूंछों पर ताव देने वाले का दांव खाली चला जाता है। मूंछ कटे को नाक कटा भी लोग मानते हैं, लेकिन हकीकत में मूंछें मर्दों का श्रृंगार होती हैं, रौबदार, पानीदार, बट और बल वाली मूंछों से लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं।' मूंछों पर चली बहस से ही मॉर्निंग वॉक का जब समय खत्म होने वाला था, तब रामनिवास जी बोले, 'मूंछों के भी भाव होते हैं, मूंछ और ताव का गठजोड़ होता है। बगैर मूंछों के ताव के मुकाबले कोई ताव, ताव नहीं होता है, लेकिन जब अपमान का घूंट पीना पड़ता है तो मूंछें नीचे हुई मानी जाती हैं। जब खाने-पीने की चीजों में मूंछें डूबने लगती हैं तो उसे आलसी और अजीबो-गरीब माना जाता है। ऐंठने वाली मूंछें जब तनी हुई रहती हैं तब पूरा फेस हर मोर्चे को फेस करने के लिए तैयार रहता है।' वे आगे बोले, 'कटी मूंछें, तनी मूंछे, राजसी मूंछ, फनी मूंछ, झुकी मूंछ, फुकी मूंछ, फेक मूंछ भांति-भांति के मूंछों पर किसी शायर ने कहा है, हमारी मूंछ का आलम यह है कि ताव हम देते हैं, घाव दुनिया पर पड़ता है। इसलिए मूंछें हों तो नत्थूलाल जैसी वरना न हों।' *

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

भाई से बड़ा

आज गोपाल की आंखें नम थीं। उसके साथ जो हुआ, कभी वह सोच भी नहीं सकता था। छोटे भाई साजन को अपनी ससुराल जाना था। वहां कोई धार्मिक अनुष्ठान था। निमंत्रण पत्र गोपाल के पास भी आया था। साजन के पास बड़ी गाड़ी थी। गोपाल ने उससे पूछा, 'साजन तुझे ससुराल जाना है न शाम को?'

'हां भैया, जाना है।' साजन ने जवाब दिया। गोपाल ने कहा, 'साजन मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।' 'यह तो बहुत अच्छी बात है। आपको जरूर ले चलूंगा।' साजन ने भरोसा दिया।

गोपाल ने जाने की पूरी तैयारी कर ली। बस इंतजार था साजन के बुलाने का। गोपाल ने अपने बड़े बेटे से कहा, 'अरे बेटा, देखकर तो आ, तेरा चाचा मुझे लेने क्यों नहीं आया? समय तो हो चुका है।'

'जी पिताजी।' कहकर बेटा चाचा के घर चला गया। वहां से लौटकर बताया, 'पिताजी, चाचा जी तो निकल गए, घर पर ताला लगा हुआ है और गाड़ी भी नहीं है वहां।' गोपाल का मन भारी हो गया। उसने तुरंत फोन किया, 'साजन कहां है तू?'

'भैया मैं तो निकल गया ससुराल के लिए।' साजन ने जवाब दिया। 'मुझे तो तेरे साथ चलना था और तूने हामी भी भरी थी।' गोपाल बोला। 'हां भैया...पर बात ऐसी थी कि...।' वह बोलता-बोलता रुक गया। 'कैसी बात थी भाई?' गोपाल ने पूछा। 'गाड़ी में एक सीट आगे की खाली थी, लेकिन मुझे ओरियो को ले जाना पड़ा।' साजन हकलाते हुए बोला। 'ओरियो...ये ओरियो कौन है?' गोपाल ने आश्चर्य से पूछा। 'भैया, ओरियो मेरे डॉगी का नाम है।' साजन ने बताया।

'क्या डॉगी को बैठाने के लिए तूने बड़े भाई को छोड़ दिया... भाई से बड़ा तेरा डॉगी हो गया।' कहकर गोपाल ने तुरंत फोन काट दिया। *

पुस्तकः शोर एवं अन्य कविताएं (कविता संग्रह)
रचनाकारः मनोज मोहन,
मूल्यः200 रु, **प्रकाशकः** सेतु प्रकाशन, नोएडा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

चुप्पियों का शोर

कई वर्षों से साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय मनोज मोहन का पहला कविता संग्रह 'शोर एवं अन्य कविताएं' हाल में ही छपकर आया है। मनोज अपनी कविताओं में कम शब्द खर्च करके बड़ी और गहरी बात कहने में यकीन करते हैं। यही वजह है कि संग्रह की अधिकांश कविताएं छोटी हैं लेकिन उनमें हमारे समय, समाज के विद्रूप और मनुष्यता के समक्ष उपस्थित संकटों को साफ तौर पर लक्षित किया जा सकता है। *'मैं चाहता हूं होना/सामान्य व्यक्ति/जिसे सहज जीवन मिले।'* (सामान्य व्यक्ति) और *'चलो हम एक किताब बनाएं/जहां तुम दिखो खुश-खुश/मैं रहूं उदास-उदास।'* (चलो हम एक किताब बनाएं) जैसी पंक्तियां अपनी साधारणता में भी असाधारण भावार्थ प्रकट करती हैं। ये कविताएं हमें वैचारिकता का एक नया प्रस्थान बिंदु प्रदान करती हैं। कुछ कविताओं को घर, तुम और महामारी खंडों में भी संकलित किया गया है। *

गोवा को आमतौर पर शानदार सी बीचेज वाले स्थल, हनीमून और मस्ती भरे टूरिस्ट डेस्टिनेशन के तौर पर जाना जाता है। लेकिन गोवा में ऐसे कई लोकेशंस भी हैं, जो हमें इतिहास और संस्कृति से रूबरू कराते हैं। जानिए, गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही ऑफबीट टूरिस्ट प्लेसेस के बारे में।

टूरिस्ट स्पॉट

बुशरा फातमा

इतिहास-संस्कृति से रूबरू कराते
गोवा के ये अनोखे पर्यटन स्थल

हलांकि भारत के लगभग हर राज्य में ऐसे स्थल मौजूद हैं, ऐसी ढेरों कहानियां और किस्से सुनने-पढ़ने को मिल जाएंगे, जिसमें उस स्थान और अपने देश से जुड़े गौरवशाली इतिहास का ब्यौरा मिलता है। गोवा में भी ऐसे कई कम चर्चित स्थल मौजूद हैं। खूबसूरत सी बीचेज के लिए दुनिया भर में फेमस गोवा में स्थित कुछ ऐसे ही लोकेशंस के बारे में आपको बता रहे हैं, जहां इतिहास और संस्कृति का मिला-जुला संगम देखने को मिलता है।

बुड़बुड़ ताली

साउथ गोवा के नेत्रवाली में एक अनोखा तालाब मौजूद है, जिसे बुड़बुड़ ताली या बबल लेक के नाम से जाना जाता है। करीब 400 साल पुराना यह तालाब गोपीनाथ मंदिर के प्रांगण में मौजूद है, जहां सिर्फ ताली बजाने या किसी तेज आवाज से ही तालाब के नीचे से पानी के ऊपर की तरफ बुलबुले बनने लगते हैं। यहां के स्थानीय लोगों में इस तालाब को लेकर बहुत श्रद्धा है। हालांकि साइंटिस्ट्स इस प्रभाव के लिए किसी रासायनिक क्रिया और गैस को जिम्मेदार मानते हैं। कुदरत के करिश्मे वाले इस अनोखे तालाब को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

उसगलीमल शिलालेख

साउथ गोवा के उसगलीमल गांव में मौजूद यह शिलालेख, करीबन 4 हजार से 6 हजार साल पुराना है। सालों तक इस गांव से बहती कुशावती नदी की गोद में छुपे ये शिलालेख लोगों की नजरों से दूर थे। 1993 में जब गांव वालों की नजर नदी के किनारे पत्थरों पर अलग-अलग आकृतियों पर पड़ी तो उन्होंने पुरातत्व विभाग को खबर दी। पता चला ये हजारों साल पहले, शायद मध्य पाषाण युग का समय था, जब इंसान अपने आस-पास की चीजों को देखकर उसकी आकृति पत्थरों पर उकेरा करता था। इन आकृतियों में जानवर, तरह-तरह के रास्ते और पैरों के निशान देखने को मिलते हैं। अगर आप इतिहास और पुरातात्विक अवशेषों में रुचि रखते हैं, तो गोवा के इस जगह पर आपको जरूर जाना चाहिए। घने जंगल और कुशावती नदी का यह हिस्सा आपका मन मोह लेगा।

कुर्डी गांव

रिवोना केव

कुर्डी गांव

सन 1960 तक सांगेम तालुका नामक स्थान पर मौजूद कुर्डी गांव एक अच्छा-खासा बसा-बसाया गांव हुआ करता था। हिंदू, मुस्लिम और कैथलिक समुदाय की समृद्ध आबादी यहां निवास करती थी। सन 1960 में जब साउथ गोवा को ज्यादा मात्रा में पानी मुहैया करवाने के लिए सलौलिम डैम बनाने का प्रस्ताव आया तो सबसे पहले कुर्डी गांव को खाली करवाया गया। ये पूरा गांव पानी के अंदर समा गया ताकि डैम का पानी सुचारू रूप से बह सके। मई महीने में जब पानी का स्तर कम होता है तब गांव का कुछ हिस्सा पानी के बाहर दिखाई देता है। वे लोग, जो अपना घर बार छोड़कर दूसरी जगह बस गए वो मई महीने में यहां आकर अपनी पुरानी यादों को ताजा करते हैं। हर साल तीनों समुदाय के लोग यहां आकर अपने-अपने धार्मिक जगहों की स्मृति में उत्सव मानते हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में पर्यटक भी यहां जुटते हैं।

रिवोना केव

साउथ गोवा में स्थित रिवोना केव यानी रिवोना गुफाओं को उस दौर का ऐतिहासिक स्थल माना जाता है, जब गोवा में मानव समुदाय की बस्ती बसनी शुरू ही हुई थी। माना जाता है कि इस जगह पर उस समय के बुद्धिमान लोग ही आकर बसते थे। मान्यता है कि यहां बौद्ध धर्म के अनुयायी भी रहा करते थे। 7वीं शताब्दी की इन गुफाओं को देखने के लिए यहां देश-विदेश से काफी पर्यटक आते हैं। *

इंसान ही नहीं पशु-पक्षी भी
करते हैं बदलते मौसम की तैयारी

हम इंसान तो तकनीकों के जरिए मौसम में आने वाले बदलावों का पता लगाकर उसके हिसाब से अपनी तैयारी करते हैं। लेकिन प्रकृति ने कई पशु-पक्षियों को ऐसी क्षमता नैसर्गिक रूप से प्रदान की है। ऐसे ही कुछ जंतुओं के बारे में जानिए।

रोचक / अपराजिता

पशु-पक्षी भले इंसानों की तरह तेज दिमाग के न होते हों, लेकिन इंसानों की ही तरह आने वाले मौसम की दुश्वारियों से बचने के लिए अपने स्तर पर वे भी बाकायदा योजनाबद्ध ढंग से तैयारी करते हैं। जिस तरह मौसम बदलने से पहले इंसान गर्म कपड़ों, छत की मरम्मत या पंखे, कूलर आदि को दुरुस्त कर लेते हैं, उसी तरह धरती के दूसरे पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की चुनौतियों के लिए अपनी ही सूझबूझ और योजनाबद्धता से तैयारी करते हैं। फर्क सिर्फ इतना होता है कि इंसानों के विपरीत ये पशु-पक्षी ऐसी तैयारियां बिना किताबें पढ़े, बिना मौसम विभाग की चेतावनी सुने ही करते हैं। क्योंकि इनके पास न रेडियो होता है, न प्रकृति की गतिविधियों की सूचना देने वाला इनके लिए कोई जरिया होता है। दरअसल, खुद कुदरत ने ही इन्हें अनुमान लगाने की अद्भुत क्षमता दी है, ये उसी के आधार पर अपने सहज ज्ञान और जैविक अनुभव प्रवृत्तियों के जरिए मौसम की बदलती करवटों के लिए महीनों पहले से ही तैयारी में जुट जाते हैं।

कोयल की कूक का संकेत: भारत के ग्रामीण परिवेश में बहुत सारी जानकारियों को अखबारों, रेडियो या किताबों से नहीं, पशु-पक्षी की गतिविधियां देखकर जानी, समझी जाती हैं। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुर स्वर आ गया है, तो इसका मतलब यह है कि वह बदलते तापमान के प्रभाव में अपने प्रजनन चक्र को समायोजित करने की कोशिश में है। मसलन, अगर कोयल के स्वर में मधुरता है, तो पतझड़ निकट है, क्योंकि मार्च, अप्रैल में जब पेड़ों पर नई कोपलें फूटती हैं, उसी समय कोयल, कौवे के घोंसले में चुपके से अंडे दे देती है, इसे विषय के जानकार लोग 'ब्रूड पैरासिटिज्म' कहते हैं यानी जब तपती गर्मी आए, तो उसके बच्चे किसी अन्य पक्षी की देखभाल में सुरक्षित पलें। कहने का मतलब यह है कि कोयल खुद मौसम की कठिनाइयों को समझकर पहले से ही अपनी अगली पीढ़ी की सुरक्षा सुनिश्चित कर लेती है।

हाथी बताता है जल का स्रोत: हाथी एक ऐसा पशु है, जो भारत में मानसून और सूखे दोनों का बहुत सटीक तरीके से

अंदाजा लगा लेता है। सूखा पड़ने से पहले वह झुंड बनाकर लंबी यात्राएं शुरू कर देता है और उस ओर बढ़ता है, जहां जलस्रोत होते हैं। राजस्थान और मध्य भारत के जंगलों में हाथियों का यह जलप्रवास, वर्षों पुराने जलस्रोतों की उनकी स्मृतियों पर आधारित होते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि वे भूमि की नमी, पौधों के मुरझाने और हवा की गंध से पानी की कमी का किसी भी वैज्ञानिक डिवाइस से ज्यादा सटीक अनुमान लगा लेते हैं।

अबाबील देती है मानसून का संदेश: इस छोटी-सी चिड़िया को भारत में मानसून की संदेशवाहक भी कहते हैं। दरअसल, अबाबील, हजारों किलोमीटर दूर अफ्रीका या दक्षिण भारत से उड़कर गर्म और आर्द्र इलाकों में आती है।

वैज्ञानिकों ने सालों निगरानी के बाद यह पाया है कि अबाबील पक्षी केवल भोजन की तलाश के लिए प्रवास नहीं करती। इसके इस प्रवासन चक्र में मौसम जनित सुरक्षा की भी योजना छिपी होती है। जब उत्तर भारत में सर्दी बढ़ती है और कीट-पतंगे बेहद कम हो जाते हैं, तब यह अबाबील दक्षिण भारत की ओर उड़ जाती है और जैसे ही गर्मियां लौटती हैं, यह भी अपने पुराने घर की ओर लौट आती हैं। ग्रामीण भारत में लोग अबाबील देखकर अनुमान लगाते हैं कि अब बारिश बस आने ही वाली है। वास्तव में यह पक्षी वातावरण के दबाव और आर्द्रता के सूक्ष्म बदलाव को बहुत बारीकी से महसूस कर लेती है।

इस तरह देखें तो इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी भी आने वाले मौसम की दुश्वारियों से खुद को बचाने के लिए अपने ज्ञान, पूर्वानुमान और कठोर अनुशासन का इस्तेमाल करते हैं। *

जल संचित कर लेते हैं ऊंट

ऊंट को रेगिस्तान का जहाज माना जाता है, क्योंकि वह रेगिस्तान में दूसरे किसी भी वाहन से ज्यादा बेहतर और सहजता से रह लेता है। लेकिन ऊंट सिर्फ रेगिस्तान के बारे में ही इतनी सटीकता से नहीं जानता बल्कि वह रेगिस्तान के सबसे कठोर मौसम में जीवित रहने की कला भी भलीभांति जानता है। यही वजह है कि जब राजस्थान में गर्मी अपने चरम पर होती है, तो वह न केवल अपने शरीर में पानी की खपत को नियंत्रित कर लेता है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से उसका शरीर पानी को पुनःअवशोषित करने की क्षमता भी रखता है। इसी के चलते वह कई दिनों तक बिना पानी पीए भी रह लेता है, लेकिन यही ऊंट मानसूनी संकेत मिलने पर जरूरत से कई गुना ज्यादा पानी पीता है। अपने शरीर में एक वाटर रिजर्व भी बना लेता है। वास्तव में यह उसकी छठी इंद्री का मौसम प्रबंधन है, जो रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में उसके जीवन को संभव बनाता है।

अवेयरनेस

शिखर चंद जैन

घर में सुविधायुक्त टॉयलेट, हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण एवं गरिमापूर्ण जीवन के लिए भी बहुत जरूरी है। वर्ल्ड टॉयलेट-डे, 19 नवंबर पर बता रहे हैं इससे जुड़ी कुछ रोचक बातें।

सभी के लिए है जरूरी
स्वच्छ-सुविधायुक्त टॉयलेट

हर साल 19 नवंबर को वर्ल्ड टॉयलेट डे यानी विश्व शौचालय दिवस मनाया जाता है। आप सोच रहे होंगे कि भला शौचालय के लिए भी कोई दिन मनाने की क्या जरूरत है! आपको बता दें कि भले ही आपके घर में सुविधायुक्त शौचालय है, लेकिन दुनिया में आज भी करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिनके पास सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय नहीं हैं। विश्व शौचालय संगठन द्वारा एकत्रित आंकड़ों के अनुसार, विश्व में लगभग एक अरब लोग आज भी खुले में शौच करते हैं। ऐसे में यह दिन हमें यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि शौचालय हमारे स्वास्थ्य, सम्मान और पर्यावरण के लिए कितना जरूरी है।

विश्व शौचालय दिवस का इतिहास: विश्व शौचालय दिवस की शुरुआत 2001 में हुई थी। स्वास्थ्य और जन सरोकार विशेषज्ञों की सलाह पर स्वच्छता के मुद्दों पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए विश्व शौचालय संगठन की स्थापना की गई। वर्षों की अंतरराष्ट्रीय बहस और सिफारिश के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने 2013 में आधिकारिक तौर पर विश्व शौचालय दिवस को वार्षिक आयोजन के रूप में घोषित किया। यह दिवस 2030 तक सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

बुनियादी जरूरत है शौचालय: इस वर्ष विश्व शौचालय दिवस की थीम 'बदलती दुनिया में स्वचछता' और स्लोगन है 'हमें हमेशा शौचालय की आवश्यकता होगी'। इस साल की थीम और स्लोगन का मुख्य संदेश यह है कि चाहे दुनिया कितनी भी बदल जाए, जितनी भी नई तकनीकें आ जाएं, हम चाहे कितने ही एडवांस हो जाएं, शौचालय की जरूरत कभी खत्म नहीं होगी। यह कोई लग्जरी नहीं बल्कि एक बुनियादी जरूरत है। हर घर में शौचालय होना तो आवश्यक है ही। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम शौचालय का इस्तेमाल करते समय और उसके बाद कुछ बातों का ध्यान रखें।

फ्लश करते समय रखें ध्यान: टॉयलेट में फ्लश हमेशा ढक्कन लगाकर करें क्योंकि टॉयलेट फ्लश आपके टॉयलेट से छह फीट की ऊंचाई तक कीटाणुओं को बाहर निकाल सकता है। हर बार जब आप टॉयलेट फ्लश करते हैं, तो कीटाणु हवा में उड़ जाते हैं और आपके बाथरूम में घूमकर आपके टॉयलेट के आस-पास की जगहों और वस्तुओं जैसे-टूथब्रश, साबुन आदि पर भी पहुंच सकते हैं। अगर आपके टॉयलेट सीट में ढक्कन नहीं है, तो टॉयलेट फ्लश करने के बाद तुरंत बाहर निकल जाएं।

हाथ अच्छे से धोएं: टॉयलेट यूज करने के बाद बहुत अच्छी तरह से हाथ धोना जरूरी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग 20 प्रतिशत लोग शौचालय जाने के बाद अपने हाथ नहीं धोते। जो लोग धोते भी हैं, उनमें से केवल 30 प्रतिशत ही साबुन का इस्तेमाल करते हैं, जबकि बाथरूम के कीटाणुओं को मारने के लिए साबुन से लगभग 15 से 20 सेकेंड तक अच्छी तरह हाथ धोने की सलाह दी जाती है। निराशाजनक बात यह है कि केवल 5 प्रतिशत लोग ही 15 सेकेंड या उससे ज्यादा समय तक हाथ धोते हैं।

टॉयलेट पेपर का हो सीमित इस्तेमाल: टॉयलेट पेपर का आवश्यकतानुसार सीमित उपयोग करने की आदत डालनी चाहिए। इसे एक्स्ट्रा वेस्ट करने से बचना चाहिए। एक चौंकाने वाला तथ्य यह है कि अमेरिकी प्रति वर्ष 433 मिलियन मील टॉयलेट पेपर का उपयोग करते हैं, जो पृथ्वी से सूर्य तक जाने और वापस आने की सम्मिलित दूरी के बराबर है।

शौचालय में स्मार्टफोन है खतरनाक: लगभग 75 प्रतिशत स्मार्टफोन धारक शौचालय में अपने फोन का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें टेक्स्ट मैसेज भेजना, फोन कॉल करना, वेब सर्फिंग और ऑनलाइन शापिंग शामिल है। यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक आदत तो है ही, अगर फोन टॉयलेट में गिर जाए तो यह जेब पर भी भारी पड़ सकता है। मोबाइल फोन इस्तेमाल करने वाले लोग अधिक देर तक शौचालय में बैठे रहते हैं, क्योंकि उनका ध्यान फोन पर रहता है। शौचालय की सीट पर लंबे समय तक बैठने से पाइल्स हो सकता है।

पब्लिक टॉयलेट के इस्तेमाल में बरतें सावधानी: व्यापक सर्वे और अध्ययन के बेस पर विशेषज्ञों का मानना है कि अगर आप किसी सार्वजनिक शौचालय में सबसे साफ शौचालय का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो पंक्ति में सबसे पहले वाले शौचालय कक्ष (जो दरवाजे या सिंक के सबसे पास हो) का ही इस्तेमाल करें। यह आमतौर पर सबसे कम यूज किया जाता है और इसलिए तुलनात्मक रूप से अधिक साफ होता है।

सबसे गंदा स्थान नहीं है टॉयलेट: आपको यह जानकर हैरानी होगी कि औसत रसोईघर के चॉपिंग बोर्ड पर शौचालय की सीट की तुलना में लगभग 200 प्रतिशत अधिक बैक्टीरिया होते हैं। इससे ज्यादा हैरान करने वाली बात यह है कि स्मार्टफोन में टॉयलेट हैंडल की तुलना में लगभग 20 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। एक औसत डेस्क पर एक औसत शौचालय सीट की तुलना में 400 गुना अधिक बैक्टीरिया होते हैं। *

सबसे महंगा टॉयलेट

अमेरिकन स्पेस एजेंसी नासा ने हाल ही में स्पेस शटल के लिए एक सक्शन टॉयलेट डिजाइन करने पर 23.4 मिलियन डॉलर खर्च किए हैं, जो 850 लीटर वायु प्रवाह प्रति मिनट की सक्शन तकनीक के साथ शून्य गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देगा। यह दुनिया का अब तक को सबसे महंगा टॉयलेट है।

सिने ट्रेंड

कैलाश सिंह

शादी, बॉलीवुड फिल्मों का एक सदाबहार विषय रहा है। शादी पर केंद्रित एवं इसके इर्द-गिर्द फिल्में और गाने बॉलीवुड में बनते रहे हैं। इनमें से कई फिल्में और गाने सुपर-डुपर हिट रहे। इन्हें दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। विवाह-केंद्रित ऐसी ही कुछ बेहतरीन फिल्मों और गानों पर एक नजर...

हिंदी फिल्मों में खूब दिखी है
शादी-ब्याह की बहुरंगी छटा

भारतीय समाज में कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर वर्ग और समाज में शादी समारोह का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। शायद यही वजह है कि बॉलीवुड की कई फिल्मों की कहानियों के केंद्र में भी शादी समारोह को रखा गया है। चाहे वह परंपरागत अरेंज मैरिज हो, लव मैरिज हो, भागकर की गई शादी हो, अमीर-गरीब के बीच शादी हो, अंतर-जातीय या अंतर-धार्मिक विवाह हो या दो अलग-अलग संस्कृति या भाषा से संबंधित लोगों की शादी हो।

वेडिंग एलबम जैसी 'हम आपके हैं कौन': साल 1994 में रिलीज फिल्म 'हम आपके हैं कौन' वेडिंग फंक्शन पर केंद्रित एक बेहतरीन फिल्म है। फिल्म के केंद्र में यूं तो प्रेम (सलमान खान) और निशा (माधुरी दीक्षित) की लव स्टोरी, अपने परिवार के लिए त्याग की भावना है। लेकिन यह वास्तव में अभिभावकों द्वारा तय किए गए परंपरागत हिंदू विवाह का प्रभावी ढंग से तैयार किए गए शादी के वीडियो एलबम की तरह है। फिल्म में दो दोस्त जब बहुत दिनों बाद मिलते हैं, तो आपस में अपने बच्चों की शादी कराने का निश्चय करते हैं और फिर एक परंपरागत विवाह का सिलसिला आरंभ हो जाता है। लड़के और लड़की की मुलाकात घर से बाहर अलग स्थान पर कराई जाती है। वे एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं। फिर उनकी सगाई होती है और बाद में लड़के वाले बारात लेकर कन्या पक्ष के घर पहुंचते हैं। फिल्म में जूते चुराने के रस्म से लेकर शादी से संबंधित अनेक रस्मो-रिवाज को खूबसूरती से दिखाया गया है। जूते चुराने की रस्म पर केंद्रित गाना 'जूते दे दो पैसे ले लो' फिल्माया गया है। इसके अलावा भी फिल्म में कई सिचुएशंस पर बेहतरीन गीत पिरोए गए हैं।

'मेरे महबूब' में राजेंद्र कुमार-साधना

परंपरागत विवाह पर बनी फिल्में: देखा जाए तो उत्तर भारत में परंपरागत हिंदू विवाह और परंपरागत मुस्लिम शादी में कोई विशेष अंतर नहीं है। यहां शादी में फेरों की जगह काजी को बुलाकर निकाह पढ़वाया जाता है। मां-बाप द्वारा रिश्ता तय करना, सगाई, बारात, जूते चुराई, विदाई जैसी कई रस्में हिंदू और मुस्लिम समाज की शादियों में समान रूप से देखी जा सकती हैं। 'बहू बेगम', 'मेरे हुजूर', 'मेरे महबूब' आदि फिल्मों में शादी की इन रस्मों को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। बी.आर. चोपड़ा ने तो अपनी फिल्म 'निकाह' में शादी के साथ-साथ तीन तलाक जैसे संवेदनशील मुद्दे को भी उठाया है।

पंजाबी-एनआरआई परिवार की 'मानसून वेडिंग': मीरा नायर की 2001 में आई फिल्म 'मानसून वेडिंग', दिल्ली के एक पंजाबी परिवार में शादी के आयोजन और इस दौरान होने वाले उथल-पुथल पर केंद्रित है। फिल्म में ललित वर्मा और उनकी पत्नी पिम्मी अपनी बेटी अदिति की शादी एक एनआरआई हेमंत राय से तय करते हैं। जैसा कि भारतीय समाज में अकसर होता है, इस प्रकार के विवाह में एक बार पूरा विस्तृत परिवार दुनिया भर से आकर एक जगह एकत्र हो जाता है और अपने साथ अपना भावनात्मक अतीत भी लेकर आता है। शादी की तैयारियों के बीच पारिवारिक चुगलियां, राजनीति, साजिशें, हंसी-मजाक, मौज-मस्ती आदि सब कुछ चल रहा होता है और नए प्रेम समीकरण भी विकसित होते हैं। फिल्म को इतनी खूबसूरती से बुना गया है कि 'मानसून वेडिंग' हर किसी को अपने ही परिवार की शादी जैसी लगने लगती है।

'हम आपके हैं कौन' में सलमान-माधुरी दीक्षित

'विकी डोनर' में आयुष्मान के साथ यामी गौतम

इंटरकल्चरल मैरिज पर आधारित 'विक्की डोनर': सुजीत सरकार की 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'विक्की डोनर' में दो अलग-अलग संस्कृतियों से ताल्लुक रखने वाले जोड़े के विवाह को दिखाया गया है। फिल्म में विक्रम उर्फ विक्की (आयुष्मान खुराना) का ताल्लुक पंजाबी अरोड़ा परिवार से होता है, जबकि अशिमा रॉय (यामी गौतम) बंगाली होती है। संतानहीन परिवारों को मोटी रकम के बदले में अपना स्पर्म डोनेट करने वाला विक्की और तलाकशुदा बैंक कर्मचारी अशिमा एक-दूसरे से शादी करना चाहते हैं, लेकिन सांस्कृतिक भिन्नता के कारण दोनों को ही अपने-अपने परिवारों से विरोध का सामना करना पड़ता है। आखिरकार सब कुछ ठीक हो जाता है।

इनमें भी दिखे शादी के अलग-अलग रंग: 'हम दिल दे चुके सनम' फिल्म में गुजराती शादियों को उनके पारंपरिक रूप में दिखाया गया है। 'हम साथ साथ हैं' में शादी और पारिवारिक रिश्ते को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया गया है। आजकल की कई फिल्मों में विवाह को प्रेम, करियर और पहचान के संघर्षों की पृष्ठभूमि में दिखाया गया है, जैसे 'वीरे दी वेडिंग' फिल्म में। 'बैंड बाजा बारात' जैसी फिल्में शादी की योजना और आयोजन को नाटकीय अंदाज में प्रदर्शित करती हैं, जिनमें वेन्यू प्रबंधक, दूल्हा-दुल्हन के परिवार के साथ मिलकर तैयारी करते हैं। *

पॉपुलर हुए विदाई के ये गीत

शादी के बाद दुल्हन की विदाई का वक्त कुछ ऐसा होता है, जब मिलन और जुदाई, खुशी और आंसू एक साथ एक ही समय व्यक्त हो रहे होते हैं। हिंदी फिल्मों में विदाई के सिचुएशन पर अनेक गीत बने हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'छोड़ बाबुल का घर, मोहे पी के नगर आज जाना पड़ा' (बाबुल), 'खुशी-खुशी कर दो विदा, तुम्हारी बेटी राज करेगी' (अनोखी रात), 'बाबुल की दुआएं लेती जा' (नील कमल) आदि कई ऐसे सदाबहार विदाई के गीत हैं, जो आज भी हिंदी पट्टी की शादियों में विदाई के समय खासतौर से बजाए जाते हैं।